हरिभूमि

सिरसा-फतेहाबाद भूमि

रोहतक, रविवार 22 फरवरी 2026

11 एआई को खतरे के रूप में नहीं सहयोगी टूल के रूप में देखें ...

12 मातृभाषा संस्कार और सांस्कृतिक पहचान की आधारशिला...

खबर संक्षेप

इग्नू ने दाखिले के लिए 28 तक करें आवेदन

फतेहाबाद। इग्नू स्टडी सेंटर समन्वयक डॉ. गुरनाम चंद ने बताया की इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने जनवरी-2026 सत्र में दाखिले की अंतिम तिथि बढ़ा दी है। अब इच्छुक छात्र-छात्राएं 28 फरवरी तक आवेदन कर सकते हैं। इस तिथि तक विद्यार्थी सभी ओपन एंड डिस्टेंस लर्निंग मोड और ऑनलाइन मोड में उपलब्ध कोर्सों में एडमिशन के लिए रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं।

63 वरिष्ठ नागरिकों का स्वास्थ्य जांचा

फतेहाबाद। वरिष्ठ नागरिकों के लिए वरिष्ठ नागरिक परिषद के तत्वाधान में नागरिक अस्पताल फतेहाबाद के सीएमओ कार्यालय के सहयोग से निःशुल्क मेडिकल चैकअप कैम्प बाल भवन फतेहाबाद के हॉल में प्रातः 10 बजे से प्रधान ईश्वर देवी सेठी की अध्यक्षता में लगाया गया। यह जानकारी देते हुए सचिव सुग्रीव सिंह बिश्नोई ने बताया इस चैकअप कैम्प में नागरिक अस्पताल से संगीता अबरोल के नेतृत्व में आई टीम ने 63 वरिष्ठ नागरिकों की निःशुल्क जांच की व दवाईयां भी वितरित की।

दहेज प्रताड़ना के लिए मुख्य आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। विवाहिता को दहेज के लिए प्रताड़ित करने, मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामले में महिला थाना फतेहाबाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मुख्य आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान संदीप सिंह पुत्र भगवान सिंह निवासी ढाणी बस्ती भीमा, फतेहाबाद के रूप में हुई है।

अधिकारी बोले: प्रतिदिन शाम के समय होगी सप्लाई

50 साल पुरानी पेयजल पाइपलाइन बदलने से पानी का संकट गहराया

लोग 3 दिन के पानी का रखे स्टॉक

हरिभूमि न्यूज ⏭फतेहाबाद

भट्टू रोड पर पब्लिक हैल्थ के बूस्टिंग स्टेशन पर पाइप लाइन बदलने के कारण शनिवार को दूसरे दिन भी शहर में पेयजल की सप्लाई नहीं हो सकी। दरअसल भट्टू रोड स्थित बूस्टिंग स्टेशन की बाऊंडी में पाइप लाइन 40-50 साल पुरानी है। पिछले कई दिनों से जर्जर हो चुकी इन पाइपों के फटने व टूटने के चलते पब्लिक हैल्थ ने पाइपों को बदलने का निर्णय लिया था ताकि आगे गर्मी के मौसम में शहरवासियों को पेयजल के संकट से न जूझना पड़े। इस कारण अब पाइप लाइन बदलने का काम चल रहा है। पब्लिक हैल्थ के एसडीओ सतपाल रोज का कहना है कि पाइप लाइन बदलने के काम अभी 7-8 दिन चलेगा। शहरवासियों को चाहिए कि वह अपने घर में पानी की बड़ी टंकी लगवाए और तीन दिन का स्टॉक अवश्य रखें। भट्टू रोड स्थित बूस्टिंग स्टेशन से पूरे शहर में पानी की सप्लाई होती है। यहां पर पाइप लाइन करीब 50 साल पहले डाली गई थी। पिछले कई दिनों से वाल्व व उसके आसपास पाइप लाइन टूटने का क्रम चल रहा है, जिससे पानी सप्लाई में बाधा आ रही थी। इसके बाद पब्लिक हैल्थ ने इस पाइप लाइन को बदलने का निर्णय लिया ताकि गर्मियों में पानी सप्लाई में दिक्कत न आए। सही मायनों में इस काम के लिए 8 से 10 दिन का समय लगना है। शहरवासियों को पानी की दिक्कत न आए, इसके लिए पब्लिक हैल्थ के कर्मचारी सुबह से शाम तक 30 से 50 फुट प्रतिदिन के टुकड़े में पाइप बदल रहे हैं ताकि शाम के समय पेयजल की सप्लाई की जा सके। शुक्रवार व शनिवार को पेयजल सप्लाई ठप्प रहने से लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। विभाग के अधिकारियों का कहना है कि शहर में पुरानी पाइपलाइन को बदलने का कार्य प्राथमिकता के आधार पर पूरा कराया जा रहा है, ताकि नागरिकों को जल्द से जल्द नियमित जलापूर्ति उपलब्ध कराई जा सके। उन्होंने कहा कि पाइपलाइन का कार्य पूर्ण होते ही जलापूर्ति बहाल कर दी जाएगी। अधिकारियों ने शहरवासियों से अपील की कि नागरिक इन दिनों अपने घरों में आवश्यकतानुसार पानी का स्टोरेज करें। उन्होंने यह भी कहा कि पानी एक बहुमूल्य संसाधन है, इसलिए नागरिक जल का सदुपयोग करें और उसे व्यर्थ न बहाएं। पाइपलाइन कार्य के दौरान पब्लिक हैल्थ की टीमें लगातार निगरानी कर रही हैं, ताकि किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने नागरिकों के सहयोग की अपील करते हुए कहा कि थोड़े समय की असुविधा भविष्य में बेहतर सुविधा का आधार बनेगी।

फतेहाबाद। पाइप लाइन बदलने के काम में जुटे कर्मचारी। *फोटो: हरिभूमि*

7-8 दिन का समय लगेगा

भट्टू रोड पर बुस्टिंग स्टेशन में पेयजल पाइप लाइन करीब 50 साल पुरानी है। पाइप लाइन जर्जर होने के कारण प्रतिदिन इसमें लीकेज की समस्या आ रही थी। आगे गर्मियों में दिक्कत न आए, इसके लिए विभाग ने बाउंड्री में पाइप लाइन बदलने का फैसला लिया है। अभी इस काम में 7-8 दिन का समय लगेगा। शहरवासियों को चाहिए कि वह अपने घरों में 3 दिन के पानी का स्टॉक अवश्य रखें।

-सतपाल रोज, एसडीओ पब्लिक हैल्थ, फतेहाबाद

पानी के अवैध कनेक्शन काटे

■ लोगों की तरफ 5 .5 करोड़ रुपये बकाया

हरिभूमि न्यूज ⏭रतिया

शहर में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने अवैध पानी कनेक्शनों के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। विभाग की टीम ने लाली रोड स्थित सर्विस स्टेशनों पर पीने के पानी के अवैध कनेक्शन काट दिए। विभाग के कनिष्ठ अभियंता छोटू राम और जिला सलाहकार शर्मा चंद लाली ने इस कार्रवाई की जानकारी दी। अधिकारियों के अनुसार, रतिया में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग का लगभग 5.5 करोड़ रुपए का बिल बकाया है।

रतिया। कनैक्शन काटती जनस्वास्थ्य विभाग की टीम। *फोटो: हरिभूमि*

बकाया बिलों का भुगतान करने की अपील

कनिष्ठ अभियंता छोटू राम ने बताया कि क्षेत्र में लोगों को पीने के पानी की समस्या का सामना करना पड़ रहा था, जिसके संबंध में विभाग को कई शिकायतें मिली थीं। इन्हीं शिकायतों के आधार पर विभाग ने यह सख्त कदम उठाया है। छोटू राम ने सभी उपभोक्ताओं से जल्द से जल्द अपने बकाया बिलों का भुगतान करने की अपील की। उन्होंने चेतावनी दी कि जिन उपभोक्ताओं के अवैध कनेक्शन काटे गए हैं, यदि वे उन्हें दोबारा जोड़ते हैं, तो उनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई की जाएगी। जिला सलाहकार शर्मा चंद लाली ने बताया कि यह अभियान लाली रोड से शुरू किया गया है।

हेल्थ केयर फ्रेंचाइजी के नाम पर 30 लाख ठगे

फतेहाबाद। जिला पुलिस की साइबर सेल ने ऑनलाइन धोखाधड़ी करने वाले अंतर्राज्यीय गिरोह के विरुद्ध सफलता हासिल की है। पुलिस ने 'टस्कर हेल्थ केयर' की फ्रेंचाइजी देने के नाम पर करीब 30 लाख रुपये हड़पने के मामले में मुख्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान उत्कर्ष कश्यप पुत्र अनूप कुमार, निवासी जिला हरदोई, उत्तर प्रदेश के रूप में हुई है । साइबर थाना फतेहाबाद प्रभारी निरीक्षक राहुलदेव ने इस बारे जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस ने सुशील कुमार निवासी गांव धौलू, जिला फतेहाबाद की शिकायत पर केस दर्ज किया था। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि उसने इंटरनेट पर टस्कर हेल्थ केयर का एक विज्ञापन देखा था। विज्ञापन पर क्लिक करने के बाद ठगों ने उससे संपर्क किया और फ्रेंचाइजी देने का लालच सिक्योरिटी फीस, सामान और अन्य शुल्कों के बहाने अलग-अलग बैंक खातों में 29 लाख 80 हजार रुपये गबन कर लिए।

नागरिकों से मुलाकात कर राज्यसभा सांसद बराला ने सुनीं जन समस्याएं

टोहाना। नागरिकों की समस्याएं सुनते सांसद सुभाष बराला।

हरिभूमि न्यूज ⏭टोहाना

राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने शनिवार को अपने आवास पर क्षेत्र के नागरिकों एवं पार्टी कार्यकर्ताओं से मिलकर विचार-विमर्श किया एवं जन समस्याओं का निवारण किया। उन्होंने सभी नागरिकों की बात ध्यान से सुनी और उनके आव्हानों का समाधान सुनिश्चित करने हेतु तत्क्षण संबंधित विभागों के अधिकारियों को स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए। राज्यसभा सांसद सुभाष ने कहा कि जनता से सीधा संवाद ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। सांसद ने कहा कि केंद्र सरकार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में तथा राज्य सरकार नायब सिंह सैनी के मार्गदर्शन में देश विकास और प्रगति का अद्वितीय युग देख रहा है, और इस यात्रा में हर नागरिक की भागीदारी अनिवार्य है। केंद्र सरकार द्वारा देशभर में बुनियादी सुविधाओं को सशक्त किया जा रहा है, वहीं सीएम के निर्देशों के अनुपालन में हर जिले में विकास की गति अब और भी तेज हुई है। विकसित भारत का हमारा दृष्टिकोण केवल बुनियादी ढांचे के विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिकों को सशक्त बनाने, शासन में पारदर्शिता लाने और हर वर्ग को मुख्यधारा से जोड़ने की सरकार की प्राथमिकता को भी दर्शाता है।

> नागरिकों एवं कार्यकर्ताओं से मिलकर विचार-विमर्श किया

सुरक्षित निवेश के कई मजबूत विकल्प, मिलेगा बढ़िया रिटर्न

- पीपीएफ, एनएससी, एससीएसएस और सुकन्या जैसी योजनाएं दे रही हैं आकर्षक ब्याज और टैक्स लाभ
- कम जोखिम में स्थिर आय और लंबी अवधि में मजबूत फंड बनाने के विकल्प
- बैंक एफडी से आगे बढ़कर सोचें, सरकारी योजनाओं में छिपा है बेहतर रिटर्न

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में निवेशकों की सबसे बड़ी प्राथमिकता है पूंजी की सुरक्षा और स्थिर रिटर्न। शेयर बाजार की अस्थिरता से घबराने वाले या जोखिम कम लेना चाहने वाले लोग आमतौर पर बैंक एफडी का सहारा लेते हैं। लेकिन क्या एफडी ही एकमात्र सुरक्षित विकल्प है? असल में, सरकार समर्थित कई ऐसी योजनाएं हैं जो न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि कई मामलों में एफडी से बेहतर ब्याज भी देती हैं। आइए जानते हैं ऐसे ही भरोसेमंद निवेश विकल्पों के बारे में, जहां सुरक्षा के साथ अच्छा रिटर्न भी मिल सकता है।

कंपाउंडिंग के लिए सबसे बेहतर

1. पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ) अगर आपका लक्ष्य लंबी अवधि में सुरक्षित तरीके से बड़ा फंड बनाना है, तो पीपीएफ एक बेहतरीन विकल्प है।

- निवेश अवधि: 15 वर्ष
- वर्तमान ब्याज दर : 7.1% (सरकार द्वारा तिमाही आधार पर तय)
- अधिकतम निवेश : 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- टैक्स लाभ : धारा 80सी के तहत छूट
- पीपीएफ की सबसे बड़ी खासियत है इसका ईईई स्टेटस निवेश, ब्याज और मैच्योरिटी राशि तीनों टैक्स-फ्री होती हैं। यह योजना खासकर उन निवेशकों के लिए उपयुक्त है जो रिटायरमेंट या बच्चों की उच्च शिक्षा जैसे दीर्घकालिक लक्ष्य के लिए सुरक्षित निवेश करना चाहते हैं।

2. नेशनल सेविंग सर्टिफिकेट (एनएससी)

- यदि आप 5 साल की अवधि के लिए सुरक्षित निवेश चाहते हैं, तो एनएससी एक अच्छा विकल्प हो सकता है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष
- ब्याज दर : लगभग 7.7%
- टैक्स लाभ : 80सी के तहत छूट
- एनएससी में निवेश की गई राशि सुरक्षित रहती है और तय ब्याज दर के अनुसार परिपक्वता पर रिटर्न मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए बेहतर है जो मध्यम अवधि के लक्ष्य के लिए निवेश करना चाहते हैं और जोखिम नहीं लेना चाहते।

3. सीनियर सिटीजन सेविंग स्कीम (एससीएसएस)

- यह योजना विशेष रूप से 60 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों के लिए है।
- निवेश अवधि : 5 वर्ष (आवश्यकतानुसार बढ़ाई जा सकती है)
- ब्याज दर : लगभग 8% से अधिक (तिमाही समीक्षा के अधीन)

नियमित ब्याज भुगतान

- एससीएसएस उन सेवानिवृत्त लोगों के लिए बेहद उपयोगी है जो अपने रिटायरमेंट फंड से नियमित आय चाहते हैं। ब्याज तिमाही आधार पर मिलता है, जिससे नकदी प्रवाह बना रहता है।

4. पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम (एमआईएस)

- अगर आप सुरक्षित निवेश के साथ हर महीने नियमित आय चाहते हैं, तो पोस्ट ऑफिस मंथली इनकम स्कीम एक बेहतर विकल्प है।
- निवेश अवधि: 5 वर्ष
- ब्याज दर: लगभग 7.4%
- मासिक ब्याज भुगतान

5. सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई)

- बेटियों के भविष्य को सुरक्षित करने के लिए यह योजना विशेष रूप से बनाई गई है।
- पात्रता: 10 वर्ष या उससे कम आयु की बेटी
- निवेश अवधि: 15 वर्ष
- मैच्योरिटी: 21 वर्ष
- अधिकतम निवेश: 1.5 लाख रुपये प्रति वर्ष
- ब्याज दर: लगभग 8.2%
- एसएसवाई वर्तमान में सबसे अधिक ब्याज देती है।

सिर्फ एसआईपी नहीं एसडब्लूपी भी जरूरी

एसआईपी संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बिना योजनाबद्ध निकासी निवेश को कर देती है बर्बाद

बिजनेस डेस्क

जनवरी 2026 में निवेशकों ने सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए म्यूचुअल फंड में 31,000 करोड़ रुपये का निवेश किया। एसआईपी अब आदत जैसी बन गई है। यह संपत्ति निर्माण का एक आसान और व्यवस्थित तरीका बन गया है। लेकिन असली परीक्षा तब शुरू होती है जब आप इसका उपयोग करना शुरू करते हैं। बिना योजनाबद्ध निकासी रणनीति के वर्षों का अनुशासित निवेश जल्दी ही बिखर सकता है। इसलिए हर एसआईपी के साथ एक सिस्टमैटिक विदड्रॉल प्लान (एसडब्लूपी) होना भी जरूरी है। एसआईपी संपत्ति संचय का एक प्रभावी साधन है, लेकिन यह सुचारु परिणाम की गारंटी नहीं देता। इसलिए एसआईपी से बाहर निकलने का समय बेहद महत्वपूर्ण होता है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि आपका एसआईपी कितने समय तक चला या आपने इसे किस बाजार परिस्थिति में शुरू किया। अंतिम चरण में बाजार में गिरावट आपकी योजनाओं को पटरी से उतार सकती है। मान लीजिए एक निवेशक ने जनवरी 2005 में एसबीआई निफ्टी इंडेक्स फंड में 10,000 रुपये की मासिक एसआईपी शुरू की। लक्ष्य था 2020 के मध्य तक घर की डाउन पेमेंट के लिए 40 लाख रुपये जुटाना। 31 जनवरी 2020 तक 18 लाख रुपये का निवेश बढ़कर 40.73 लाख रुपये हो गया। लक्ष्य आसानी से हासिल होता दिख रहा था। फिर महामारी के कारण बाजार में गिरावट आई। 23 मार्च 2020 तक यह कॉर्पस घटकर 26 लाख रुपये रह गया यानी अचानक 14 लाख रुपये की कमी। पोर्टफोलियो को दोबारा संभलने में लगभग आठ महीने लग गए। यदि निवेशक ने लक्ष्य तिथि से 12-18 महीने पहले एसडब्लूपी के माध्यम से चरणबद्ध निकासी शुरू कर दी होती तो कुछ मुनाफा सुरक्षित किया जा सकता था। एसडब्लूपी मूलतः एसआईपी का उल्टा है। नियमित अंतराल पर निश्चित रकम निवेश करने के बजाय आप तय समयावधि में नियमित रूप से निश्चित राशि निकालते हैं। जैसे-जैसे लक्ष्य नजदीक आता है, एसडब्लूपी एक संतुलित और क्रमिक निकासी का मार्ग तैयार करता है।

बकेट रणनीति भी बनाएं

रिटायरमेंट में हर फंड एसडब्लूपी के लिए उपयुक्त नहीं होता। विशेषज्ञ तीन-बकेट रणनीति सुझाते हैं। तीन साल के खर्च लिक्विड फंड में, चौथे से सातवें वर्ष के खर्च कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड में और दीर्घकालिक निवेश इक्विटी में ताकि मुद्रास्फीति को मात दी जा सके। निकासी पहले बकेट से शुरू होती है। जैसे-जैसे वह कम होता है, दूसरे बकेट से उसे भरा जाता है और बाद में तीसरे बकेट से। यह स्तरीय संरचना निकट अवधि के खर्चों को इक्विटी की अस्थिरता से बचाती है और दीर्घकालिक वृद्धि को बनाए रखती है।

चक्र को पूरा करना जरूरी

हर वित्तीय यात्रा व्यक्तिगत लक्ष्यों, आय पैटर्न और जोखिम सहनशीलता से प्रभावित होती है। लेकिन सिद्धांत सार्वभौमिक है। वितरण योजना के बिना संचय अधूरा है। एसआईपी से एसडब्लूपी तक सुचारु संक्रमण आवश्यक है। सही तरीके से किया जाए तो यह साझेदारी चक्रवृद्धि की शक्ति को जारी रखते हुए आपको नियमित आय भी देती रहती है।

एसडब्लूपी है वितरण की संरचना

इस संरचना के दो प्रमुख लाभ हैं। पहला यह अंतिम समय की बाजार अस्थिरता से अर्जित लाभ के एक हिस्से की सुरक्षा करता है। दूसरा जो राशि नहीं निकाली जाती, वह निवेशित बनी रहती है और अंतिम चरण में संभावित बढ़त का लाभ उठाती है। उद्योग के विशेषज्ञ अब एसआईपी और एसडब्लूपी को एक संयुक्त रणनीति के दो हिस्सों के रूप में देखते हैं। वे इस संयोजन को जीवन भर का एसआईपी बताते हैं। कमाई के वर्षों में व्यवस्थित बचत और आय कम होने पर व्यवस्थित निकासी, बिना चक्रवृद्धि की ताकत को तोड़े। असल में एसआईपी संचय का इंजन है, जबकि एसडब्लूपी वितरण की संरचना। यह दोनों मिलकर संपत्ति निर्माण, संरक्षण और वितरण का निरंतर चक्र बनाते हैं।

सेवानिवृत्ति से आगे की भी सोचें

परंपरागत रूप से एसडब्लूपी को रिटायरमेंट आय के साधन के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन यह धारणा बदल रही है। एसडब्लूपी जीवन के विभिन्न चरणों में एक लचीला और कर-कुशल नकदी प्रवाह समाधान बनकर उभर रहा है। यह लोन की ईएमआई, बच्चों की फीस या अनियमित आय से जुड़े जीवनशैली खर्च जैसे नियमित खर्चों में मदद कर सकता है। एसडब्लूपी फ्रीलांसर, कंसल्टेंट या चक्रीय आय वाले व्यवसायियों के लिए भी उपयोगी है। अधिक आय वाले महीनों में अतिरिक्त कमाई निवेश की जा सकती है, जबकि एक छोटा एसडब्लूपी निश्चित मासिक खर्चों के लिए स्थिर आय प्रदान कर सकता है। यहां तक कि एकमुश्त लक्ष्यों जैसे शादी या घर की मरम्मत के लिए भी एसडब्लूपी चरणबद्ध निकासी की सुविधा देता है, जिससे टाइमिंग जोखिम कम होता है और शेष पूंजी निवेशित बनी रहती है।

संक्रमण की योजना भी हो

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेश के तुरंत बाद एसडब्लूपी शुरू नहीं करना चाहिए। निकासी शुरू होने से पहले पोर्टफोलियो को बढ़ने का समय चाहिए। बहुत जल्दी शुरुआत करने से यदि बाजार अस्थिर हो जाए, तो मूलधन पर असर पड़ सकता है। कर दक्षता भी इसका एक बड़ा लाभ है। प्रत्येक एसडब्लूपी किस्त में मूलधन और पूंजीगत लाभ दोनों शामिल होते हैं, लेकिन कर केवल लाभ वाले हिस्से पर लगता है। कम से कम एक वर्ष तक निकासी टालने से इक्विटी निवेश दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ कर के दायरे में आ जाता है, जिसमें सालाना 1.25 लाख रुपये तक के लाभ पर छूट मिलती है। अनिवार्य लक्ष्यों के लिए आदर्श रूप से लक्ष्य तिथि से 2-3 वर्ष पहले एसडब्लूपी शुरू कर देना चाहिए। भले ही कॉर्पस थोड़ा कम हो। अंतिम वर्ष तक इंतजार करने से जोखिम बढ़ जाता है। चरणबद्ध निकासी परिणामों को संतुलित बनाती है।

कितनी निकासी सुरक्षित है?

दीर्घकालिक स्थितियों जैसे सेवानिवृत्ति में निकासी दर यह तय करती है कि बचत 20-30 वर्षों तक चलेगी या समय से पहले खत्म हो जाएगी। जोखिम केवल बाजार की अस्थिरता नहीं, बल्कि सीक्वेंस-ऑफ-रिटर्न्स का भी होता है। यदि शुरुआती वर्षों में खराब रिटर्न के दौरान निकासी होती है तो कॉर्पस तेजी से घट सकता है। एसआईपी के विपरीत, जहां गिरते बाजार में अधिक यूनिट जमा होती हैं, एसडब्लूपी में गिरावट के दौरान समान नकदी प्रवाह के लिए अधिक यूनिट बेचनी पड़ती हैं। इसलिए निकासी दर संतुलित और सावधानीपूर्ण होनी चाहिए। आदर्श रूप से निकासी दर पोर्टफोलियो के दीर्घकालिक संभावित रिटर्न से कम होनी चाहिए। एक सामान्य नियम यह है कि निकासी वास्तविक रिटर्न यानी मुद्रास्फीति समायोजित रिटर्न के आधार पर तय हो। यदि अपेक्षित रिटर्न 10% और मुद्रास्फीति 5% है, तो निकासी 5% से अधिक नहीं होनी चाहिए। स्थिरता बनाए रखने के लिए निकासी दर अपेक्षित रिटर्न से 2-3 प्रतिशत अंक कम रखनी चाहिए। वैश्विक शोध अक्सर 3.5-4% को एक टिकाऊ दर मानता है, लेकिन इसकी उपयुक्तता एसेट आवंटन, जीवन प्रत्याशा और जीवनशैली की जरूरतों पर निर्भर करती है। प्रदर्शन के आधार पर समायोजित होने वाली डायनेमिक निकासी रणनीतियां भी मजबूती बढ़ा सकती हैं।

क्या एसआईपी सच में बना सकती है अमीर?

नौकरीपेशा लोगों के लिए छोटी बचत को निवेश में बदलना व्यावहारिक तरीका

अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की रखता है नींव

बिजनेस डेस्क

आज के दौर में हर कमाने वाला व्यक्ति चाहता है कि उसकी आय सिर्फ खर्च तक सीमित न रहे, बल्कि भविष्य में बड़ी पूंजी में बदले। नौकरीपेशा लोगों के लिए हर महीने छोटी-छोटी बचत को निवेश में बदलना सबसे व्यावहारिक तरीका है। इसी संदर्भ में एसआईपी सबसे ज्यादा चर्चा में रहता है। लेकिन सवाल यह है क्या एसआईपी वास्तव में आपको अमीर बना सकती है? सबसे पहले यह समझना जरूरी है कि एसआईपी कोई निवेश उत्पाद (प्रोडक्ट) नहीं, बल्कि निवेश करने का तरीका है। असल निवेश म्यूचुअल फंड में होता है और एसआईपी उस फंड में नियमित अंतराल पर तय रकम लगाने की प्रणाली है। यानी आप हर महीने एक निश्चित राशि निवेश करते हैं, चाहे बाजार ऊपर हो या नीचे। यही अनुशासन लंबे समय में संपत्ति निर्माण की नींव रखता है। अमीर बनने की संभावना इस बात पर निर्भर करती है कि आप कितने समय तक निवेश करते हैं और कितनी निरंतरता बनाए रखते हैं। शेयर बाजार से जुड़े फंड्स में ऐतिहासिक रूप से लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देखने को मिले हैं, लेकिन अल्पकाल में उतार-चढ़ाव स्वाभाविक है। जो निवेशक 8–10 साल या उससे अधिक का धैर्य रखते हैं, उन्हें चक्रवृद्धि का वास्तविक लाभ मिलता है। छोटी रकम भी समय के साथ बड़ी पूंजी में बदल सकती है। बशर्ते निवेश नियमित और दीर्घकालिक हो।

जल्दी अमीर बनने का शॉर्टकट नहीं

हालांकि, यह समझना भी जरूरी है कि एसआईपी "जल्दी अमीर बनने" का शॉर्टकट नहीं है। बाजार में गिरावट आएगी, रिटर्न कभी ज्यादा तो कभी कम होंगे। जो लोग कुछ महीनों में चमत्कार की उम्मीद करते हैं, वे अक्सर निराश होते हैं। असली ताकत अनुशासन और समय में छिपी है, न कि तात्कालिक मुनाफे में। जोखिम, रणनीति और समझदारी का संतुलन एसआईपी बाजार से जुड़ा निवेश है, इसलिए इसमें जोखिम भी शामिल है। यह फिक्स्ड डिपॉजिट या पीपीएफ की तरह पूरी तरह सुरक्षित विकल्प नहीं है। सही फंड का चयन, अपने जोखिम स्तर की पहचान और निवेश लक्ष्य की स्पष्टता बेहद जरूरी है। यदि आपका लक्ष्य 10-15 साल दूर है जैसे रिटायरमेंट या बच्चों की पढ़ाई तो इक्विटी आधारित फंड उपयुक्त हो सकते हैं, लेकिन कम अवधि के लक्ष्य के लिए संतुलित या डेट फंड बेहतर विकल्प हो सकते हैं।

बाजार गिरने पर घबराएं नहीं

बाजार गिरने पर घबराहट में एसआईपी रोक देना सबसे बड़ी गलती मानी जाती है। दरअसल, गिरावट के समय कम कीमत पर अधिक यूनिट मिलती हैं, जो बाजार सुधरने पर बेहतर रिटर्न दे सकती हैं। यही "रूपीकॉस्ट एवरेजिंग" का फायदा है। इसलिए समझदारी यही है कि उतार-चढ़ाव को निवेश यात्रा का हिस्सा मानें। एक और आम गलती है बहुत सारे फंड में निवेश कर देना। अलग-अलग सलाह के चक्कर में पोर्टफोलियो इतना जटिल हो जाता है कि निगरानी मुश्किल हो जाती है। बेहतर है कि अपने लक्ष्य के अनुसार सीमित और संतुलित फंड चुनें। गुणवत्ता पर ध्यान दें, संख्या पर नहीं। एसआईपी की एक बड़ी खूबी लचीलापन भी है। आपकी आय बढ़े तो निवेश राशि बढ़ा सकते हैं, जरूरत पड़े तो घटा या रोक भी सकते हैं। यह कोई कठोर अनुबंध नहीं है। लेकिन बार-बार बदलाव से बचना चाहिए; रणनीति सोच-समझकर तय करें।

यह जानना जरूरी

एसआईपी आपको रातोंरात अमीर नहीं बनाएगी, लेकिन समय, अनुशासन और सही रणनीति के साथ यह मजबूत संपत्ति निर्माण का प्रभावी साधन बन सकती है। समझदारी से किया गया निवेश, धैर्य और लक्ष्य-आधारित योजना यही वह सूत्र है जो सामान्य आय वाले व्यक्ति को भी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सकता है। अमीरी केवल बड़ी कमाई से नहीं, बल्कि सही निवेश आदतों से भी आती है।

फंड तैयार करने की जल्दबाजी छोड़िए, एसआईपी को समय दें

बिजनेस डेस्क। सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) आज म्यूचुअल फंड में निवेश का सबसे लोकप्रिय तरीका बन चुका है। छोटे-छोटे मासिक निवेश के जरिए बड़ा फंड तैयार करने का यह अनुशासित माध्यम है। लेकिन एक सवाल लगभग हर निवेशक के मन में आता है। एसआईपी में रिटर्न असली रफ्तार कब पकड़ता है? कई निवेशक 1-2 साल में शानदार मुनाफे की उम्मीद करते हैं। अगर ऐसा नहीं होता, तो वे एसआईपी बंद भी कर देते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि एसआईपी का असली फायदा समय के साथ खुलकर सामने आता है।

शॉर्ट टर्म में क्यों निराश कर सकता है एसआईपी?

अगर आप 1 से 3 साल की अवधि में एसआईपी का प्रदर्शन देखें, तो तस्वीर उतनी आकर्षक नहीं दिखती। ऐतिहासिक आंकड़ों के आधार पर निफ्टी 50 पर आधारित एसआईपी के रिटर्न का विश्लेषण बताता है कि छोटे समय में रिटर्न कई बार फ्लैट या निगेटिव भी रहा है।

कुछ अवधियों में

1. साल का एक्सआईआरआर रिटर्न -60% से ज्यादा तक गिरा
2. साल में -40% के आसपास
3. साल में -20% से ज्यादा गिरावट

शुरुआती रिटर्न कमजोर

यह सुनकर घबराहट होना स्वाभाविक है। लेकिन इसका कारण समझना जरूरी है। शेयर बाजार साइकिल में चलता है कभी तेजी, कभी गिरावट। यदि आपने एसआईपी की शुरुआत बाजार के ऊपरी स्तर पर की और उसके बाद गिरावट आई, तो शुरुआती रिटर्न कमजोर दिख सकते हैं। इसे ही टाइमिंग रिस्क कहते हैं। शॉर्ट टर्म में बाजार की दिशा आपके निवेश अनुभव को प्रभावित करती है।

5 साल के बाद बदलती है तस्वीर

- जैसे-जैसे निवेश की अवधि 5 साल के आसपास पहुंचती है, उतार-चढ़ाव का असर कम होने लगता है।
- 5 साल के अधिकांश रोलिंग पीरियड में एसआईपी का रिटर्न 5% से 10% के बीच रहा है। लंबी अवधि में रिकवरी का मौका मिलता है।

दो चीजें काम करती हैं

- रुपया लागत औसत : बाजार गिरने पर आपकी तय राशि से ज्यादा यूनिट्स मिलती हैं।
- कंपाउंडिंग : शुरुआती निवेश पर मिलने वाला रिटर्न आगे रिटर्न कमाता है।
- शुरुआती सालों की कमजोरी संतुलित होने लगती है और निवेश स्थिरता दिखाने लगता है।

7 साल के बाद बढ़ती है रफ्तार

- इतिहास बताता है कि 7 साल या उससे अधिक की अवधि में एसआईपी पर निगेटिव रिटर्न की संभावना लगभग खत्म हो जाती है। डबल डिजिट रिटर्न सामान्य हो जाते हैं। यहां सबसे बड़ा बदलाव बाजार में नहीं, बल्कि निवेशक के अनुभव में आता है। बाजार गिरता है, तो आपके पास रिकवरी का पर्याप्त समय होता है। तेजी आने पर आप उस पूरी रैली का हिस्सा बनते हैं। कंपाउंडिंग का प्रभाव स्पष्ट दिखने लगता है।

ऐसे समझें

उदाहरण के तौर पर, अगर कोई निवेशक हर महीने 10,000 रुपये एसआईपी करता है और औसतन 12% रिटर्न मिलता है, तो 3 साल में कुल निवेश 3.6 लाख पर फंड लगभग 4–4.5 लाख के आसपास हो सकता है। 10 साल में कुल निवेश 12 लाख पर फंड 23–24 लाख से ज्यादा हो सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

कब शुरू करें और कितना समय दें

- जितनी जल्दी शुरू करेंगे, उतना बेहतर।
- कम से कम 7–10 साल का नजरिया रखें।
- बाजार गिरने पर बंद न करें, जारी रखें।
- लक्ष्य आधारित निवेश करें।

असली रफ्तार कहां से

- पहले 2–3 साल: उतार-चढ़ाव
- 5 साल: स्थिरता
- 7 साल+: कंपाउंडिंग का प्रभाव
- 10 साल+: वास्तविक वेल्थ क्रिएशन

धैर्य ही असली रणनीति

एसआईपी कोई जादुई फार्मूला नहीं, बल्कि अनुशासित निवेश की प्रक्रिया है। छोटे समय में परिणाम आकर्षक न दिखें, लेकिन लंबी अवधि में यह प्रभावशाली बन जाता है। अगर आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन करने का धैर्य रखते हैं और निवेश को 7–10 साल का समय देते हैं, तो एसआईपी मजबूत संपत्ति निर्माण करेगी।

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में यह सबसे लुभावना मौका

सस्ती किस्तों का जाल : क्या सच में 'नो कॉस्ट' है ईएमआई
ईएमआई में नहीं दिखता ब्याज, लेकिन कीमत बदल जाती है

जानकारी

बिजनेस डेस्क

ऑनलाइन शॉपिंग के दौर में एक लाइन सबसे ज्यादा लुभाती है वो है 'नो कॉस्ट' ईएमआई। छोटी-छोटी किस्तें देखकर खरीदारी का फैसला आसान लगने लगता है। दिमाग कहता है "इतनी सी ईएमआई है, अभी ले लेते हैं।" लेकिन निवेश और व्यक्तिगत वित्त के नजरिए से देखें तो 'नो कॉस्ट' ईएमआई उतनी सरल नहीं, जितनी दिखाई देती है। अब सवाल यह है कि क्या वाकई इसमें कोई लागत नहीं होती? या फिर लागत सिर्फ नजर नहीं आती?

'नो कॉस्ट' ईएमआई होती क्या है?

सरल शब्दों में, 'नो कॉस्ट' ईएमआई का मतलब है कि आप किसी प्रोडक्ट की कीमत किस्तों में चुकाते हैं और आपको अलग से ब्याज नहीं देना पड़ता। यानी कुल ईएमआई जोड़ने पर रकम उतनी ही होगी जितनी प्रोडक्ट की कीमत। लेकिन बैंक या फाइनेंस कंपनी बिना कमाई के पैसा उधार नहीं देती। तो फिर ब्याज कौन दे रहा है? यहीं से असली खेल शुरू होता है।

बैंक की कमाई कैसे होती है?

जब आप ईएमआई चुनते हैं, तो आमतौर पर प्रोडक्ट पर मिलने वाला सीधा डिस्काउंट कम कर दिया जाता है। उसी घटे हुए डिस्काउंट से बैंक का ब्याज एडजस्ट कर दिया जाता है। मतलब ये कि कागजों में आपको "ब्याज नहीं" दिखता है। लेकिन आपको मिलने वाला फायदा पहले ही कम कर दिया जाता है। बैंक को उसका हिस्सा मिल जाता है, और ग्राहक को लगता है कि वह बिना अतिरिक्त खर्च के सुविधा ले रहा है।

एक उदाहरण से समझिए

- मान लीजिए आप 60,000 रुपये का स्मार्टफोन खरीदना चाहते हैं।
- फुल पेमेंट पर ऑफर: 5,000 रुपये का सीधा डिस्काउंट
- अंतिम कीमत: 55,000 रुपये
- अब आप नो कॉस्ट ईएमआई चुनते हैं डिस्काउंट घटकर 2,500 रुपये रह जाता है
- नई कीमत: 57,500 रुपये
- आपने शुरुआत में ही 2,500 रुपये ज्यादा दे दिए।
- अगर इसमें 499 प्रोसेसिंग फीस और उस पर 18% जीएसटी जोड़ दें, तो कुल खर्च लगभग 58,000 रुपये से ऊपर पहुंच सकता है।
- दिखने में ईएमआई आसान थी, लेकिन कुल भुगतान बढ़ चुका है।

सबसे बड़ा भ्रम है: ईएमआई

- सुविधा=सस्ता सौदा
- असल में ईएमआई सिर्फ भुगतान को छोटे हिस्सों में बांटती है। खर्च कम नहीं करती।
- छोटी ईएमआई दिमाग पर दबाव कम डालती है। एकमुश्त 55,000 देने से ज्यादा आसान लगता है 4,800 रुपये की मासिक किस्त देना। लेकिन कुल रकम का हिसाब अक्सर नजरअंदाज हो जाता है।
- यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव है—छोटे नंबर कम डराते हैं।
- छिपे हुए चार्ज जिन पर कम ध्यान जाता है

ये अतिरिक्त खर्च संभव

- प्रोसेसिंग फीस : 199 से 999 रुपये या उससे अधिक
- जीएसटी : प्रोसेसिंग फीस या ब्याज वाले हिस्से पर 18%
- ईएमआई कन्वर्जन चार्ज

- लेट पेमेंट पेनल्टी (यदि किस्त समय पर न भरी जाए)
- ये सभी बातें अक्सर शर्तों में छिपी होती हैं, प्रोडक्ट पेज पर बड़े अक्षरों में नहीं लिखी होतीं।
- तुलनाः फुल पेमेंट बनाम नो कॉस्ट ईएमआई

भुगतान तरीका	दिखने वाली कीमत	संभावित असली खर्च
फुल पेमेंट	55,000	55,000
नो कॉस्ट ईएमआई	57,500	58,000+

यह अंतर छोटा लग सकता है, लेकिन महंगे इलेक्ट्रॉनिक्स, फर्नीचर या एसी जैसे उत्पादों में यह हजारों रुपये तक पहुंच सकता है।

कब नो कॉस्ट ईएमआई सही विकल्प

- हर बार नो कॉस्ट ईएमआई गलत नहीं होती। कुछ परिस्थितियों में यह उपयोगी हो सकती है। आपके पास पूरी रकम उपलब्ध नहीं है। ईएमआई लेने से डिस्काउंट कम नहीं हो रहा। प्रोसेसिंग फीस शून्य है। आप कैश फ्लो मैनेजमेंट के लिए भुगतान फैलाना चाहते हैं। अगर इन शर्तों में से अधिकतर पूरी होती हैं, तो ईएमआई एक व्यावहारिक विकल्प हो सकता है।

निवेश के नजरिए से

व्यक्तिगत वित्त का एक मूल सिद्धांत है खर्च से पहले गणित करें। यदि आपके पास पर्याप्त बचत है और आप फुल पेमेंट कर सकते हैं, तो अक्सर वह सस्ता विकल्प होता है। ईएमआई चुनने से पहले यह सोचें।

सोचें क्या यह जरूरत है

- क्या ईएमआई के कारण मैं अतिरिक्त खर्च कर रहा हूं?
- क्या मैं कई ईएमआई का बोझ एक साथ उठा रहा हूं?
- कई बार लोग एक साथ 3-4 ईएमआई ले लेते हैं। छोटी-छोटी किस्तें मिलकर बड़ी मासिक देनदारी बन जाती हैं।

मार्केटिंग बनाम समझदारी

आज का ई-कॉमर्स माहौल भावनात्मक फैसले लेने को प्रेरित करता है। अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें। लेकिन समझदार खरीदार पहले कैलकुलेशन करता है, फिर निर्णय लेता है। नो कॉस्ट ईएमआई धोखा नहीं है, लेकिन अधूरी जानकारी नुकसान में बदल सकती है। नो कॉस्ट ईएमआई सुविधा देती है, लेकिन हर सुविधा की एक कीमत होती है चाहे वह सीधी दिखे या छिपी हुई हो। इसलिए पहले पूरा गणित समझें, कुल भुगतान जोड़ें, और फिर फैसला लें। क्योंकि समझदारी से किया गया खर्च ही असली बचत है।

खबर संक्षेप

हेरोइन सहित तीन तस्कर गिरफ्तार

सिरसा। सीआईए सिरसा पुलिस गांव दौलतपुर खेड़ा क्षेत्र से कार सवार तीन युवकों को हेरोइन सहित गिरफ्तार किया है। सीआईए सिरसा प्रभारी ने बताया कि पुलिस टीम रेलवे फाटक गांव दौलतपुर खेड़ा के पास मौजूद थी। इसी दौरान सामने से एक कार आती दिखाई दी जो कि पुलिस को देखकर वापस मुड़ गई। पुलिस ने शक के आधार पर कार को चेक किया तो कार सवार युवकों से हेरोइन बरामद हुई। उन्होंने बताया कि पकड़े गए आरोपियों की पहचान सिरसा जिला निवासी सुखविंद्र सिंह, तरसेम सिंह व हरदीप सिंह के रूप में हुई है। आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है।

कृत्रिम अंग नाप शिविर एक मार्च को

सिरसा। भारत विकास परिषद शाखा सिरसा एवं चौधरी देवीलाल गौशाला सिरसा के संयुक्त तत्वावधान में दिव्यांग पुनर्वास केंद्र हिसार द्वारा संचालित भारत विकास परिषद विवेकानंद हिसार के सहयोग से निःशुल्क कृत्रिम अंग नाप शिविर आगामी 1 मार्च को चौधरी देवीलाल गौशाला के प्रांगण में लगाया जाएगा। गौशाला प्रधान जोगेंद्र नागपाल ने बताया कि आगामी 1 मार्च को सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक अंग नाप शिविर आयोजित किया जाएगा। इसके बाद आगामी 14 मार्च को निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर गौशाला के ही प्रांगण में लगाया जाएगा।

कार ने मोटरसाइकिल सवार को मारी टक्कर

सिरसा। हिसार रोड स्थित डिंग मोड के समीप कार चालक ने मोटरसाइकिल सवार चाचा-भतीजे को टक्कर मार दी। आरोप है कि गाड़ी का टायर पांव पर ही चढ़ा दिया और चालक घायलों को अस्पताल पहुंचाने के बजाय वहां से फरार हो गया। पुलिस को दी शिकायत में कीर्ति नगर से हरि विष्णु कॉलोनी निवासी पुनीत शर्मा ने बताया कि वह और उसका भतीजा हिमांशु व दोस्त विजय मोटरसाइकिल पर सवार होकर किसी काम से हिसार गए हुए थे। वहां हिसार से वापस सिरसा आ रहे थे। शाम करीब 3 बजे डिंग मोड़ के पास मैरिज पैलेस के पास पहुंचे तो पीछे से आ रही गाड़ी ने उनको टक्कर मार दी। इससे वह बाइक सहित नीचे गिर गए और गाड़ी का टायर पांव के ऊपर से गुजर गया और फ्रेक्चर हो गया।

सोलर बैटरियां चोरी करने वाला आरोपी गिरफ्तार

फतेहाबाद। गांव मुसाखेड़ा स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुई चोरी की गुत्थी को सुलझाते हुए थाना जाखल पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान जोनी नाथ पुत्र गोचर नाथ निवासी राजनगर, टोहाना के रूप में हुई है । थाना जाखल प्रभारी सुरेश ने बताया कि राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मुसाखेड़ा के मुख्य अध्यापक परगट सिंह ने पुलिस को शिकायत दी थी कि 9 दिसंबर 2024 की रात अज्ञात चोरों ने स्कूल के ऑफिस का ताला तोडक़र वहां लगी स्काईलार्क कंपनी की 6 सोलर बैटरियां चोरी कर ली थी। शिकायत के आधार पर थाना जाखल में मामला दर्ज किया गया था।

बाइक चोरी का आरोपी किया गिरफ्तार

फतेहाबाद। भारतीय स्टेट बैंक के बाहर से हुई मोटरसाइकिल चोरी की वारदात को सुलझाते हुए थाना जाखल पुलिस ने मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान रविंदर कुमार उर्फ रवि पुत्र भले राम, निवासी कुलां, टोहाना के रूप में हुई है । थाना जाखल प्रभारी उप निरिक्षक सुरेश ने बताया कि इस बारे पुलिस ने रामपाल निवासी गांव साधनवास की शिकायत पर केस दर्ज किया था। शिकायतकर्ता ने कहा कि 30 जनवरी को वह जाखल स्थित भारतीय स्टेट बैंक में पैसे निकलवाने आया था।

एमएम कॉलेज में 'एआई और युवा' विषय पर विस्तार व्याख्यान

एआई को एक खतरे के रूप में नहीं सहयोगी टूल के रूप में देखें : हितेश

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

एमएम कॉलेज के कंप्यूटर साइंस विभाग द्वारा आज 'आई एंड यूथ : फ्यूचर एंड कॉज ऑफ स्ट्रेस इन यूथ' विषय पर एक विशेष विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में तकनीक के भविष्य और युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव को लेकर चर्चा की गई। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में एनआईटी, दिल्ली के कुलसचिव प्रो. (डॉ.) हितेश शर्मा और सीडीएलयू, सिरसा के डीसीएसई विभाग से प्रो. (डॉ.) विक्रम सिंह उपस्थित रहे। कॉलेज प्राचार्य डॉ. गुरचरण दास की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन कंप्यूटर साइंस विभाग से डॉ. विकेश सेठी ने किया। उन्होंने कार्यक्रम में पहुंचे अतिथियों का स्वागत किया। मंच संचालन बीसीए प्रथम वर्ष की छात्राओं प्रीति व मन्नत कौर ने किया।

फतेहाबाद। एमएम कॉलेज में उपस्थित विद्यार्थी एवं 'एआई और युवा' विषय पर विस्तार व्याख्यान को संबोधित करते मुख्य वक्ता।

व्याख्यान के दौरान दोनों विशेषज्ञों ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दोतरफा पहलुओं पर प्रकाश डाला। डॉ. हितेश शर्मा ने एआई के भविष्य पर जोर देते हुए कहा कि एआई कोई आने वाला कल नहीं, बल्कि हमारा वर्तमान है। युवाओं को इसे एक खतरे के रूप में नहीं, बल्कि एक 'सहयोगी टूल' के रूप में देखना चाहिए। जो छात्र समय रहते एआई के साथ तालमेल बिठा लेंगे, वे भविष्य के जॉब मार्केट में सबसे आगे रहेंगे। लेकिन याद रहे, मशीन कभी भी मानवीय संवेदनाओं और विवेक का विकल्प नहीं हो सकती। डॉ. विक्रम सिंह ने एआई से होने वाले तनाव पर चर्चा करते हुए कहा कि आज के युवाओं में एआई और ऑटोमेशन के कारण करियर को लेकर जो अनिश्चितता और तनाव बढ़ रहा है, उसका मुख्य कारण जानकारी का अभाव है। तकनीकी निर्भरता जब हमारी सोचने की क्षमता को कम करने लगती है, तो वह मानसिक तनाव का कारण बनती है।

तकनीक का उपयोग करें न कि गुलाम बनें

हमें तकनीक का उपयोग करना सीखना है, उसका गुलाम नहीं बनना है। कॉलेज प्राचार्य डॉ. गुरचरण दास ने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह के सत्रों का उद्देश्य छात्रों को आधुनिक तकनीक से परिचित कराना और उनके मन में तकनीक के प्रति व्याप्त असुरक्षा की भावना को दूर करना है। कार्यक्रम के अंत में एक प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया, जिसमें छात्रों ने एआई के दौर में करियर की संभावनाओं पर विशेषज्ञों से सीधे सवाल पूछे। इस अवसर पर कॉलेज स्टाफ से मंजू रानी, नीतू गोयल, नैन्सी, नितिश, सुशील दहिया, नितिन सचदेवा, मंजू कड़वासरा, श्रुति, मुकुल और अनेक विद्यार्थी मौजूद रहे।

रतिया। विधायक जरनैल सिंह को ज्ञापन देते हुए फायर ब्रिगेड कर्मचारी यूनियन के सदस्य। फोटो : हरिभूमि

फायर ब्रिगेड कर्मचारी यूनियन ने विधायक को सौंपा ज्ञापन

हरिभूमि न्यूज ⏭ रतिया

फायर ब्रिगेड कर्मचारी यूनियन के सदस्यों ने अपनी मांगों को लेकर रतिया के विधायक जरनैल सिंह को एक ज्ञापन दिया और उनकी समस्याएं विधानसभा में उठाने की मांग की। यूनियन के सदस्यों रघुवीर सिंह, हरविंद्र सिंह, बलजीत सिंह, कुलदीप सिंह, राजेंद्र सिंह, सुंदर लाल, संजय कुमार ने विधायक जरनैल सिंह को ज्ञापन देते हुए बताया कि हरियाणा सरकार का फायर बिग्रेड कर्मचारियों के प्रति रवैया ठीक नहीं है।

फायर बिग्रेड में पे रोल कर्मचारियों का पिछले वर्षों से वेतन नहीं बढ़ाया गया है। यह कर्मचारी पिछले 20 वर्षों से अनुबन्ध आधार पर कार्य कर रहे। हरियाणा सरकार के मन्त्री राव नरबीर सिंह ब्यान देते हैं कि फायर के कर्मचारी कार्यालय में ताश खेलते है और जब कोई आगजनी होती है तो उनकी गाडिय़ों के टायर पेंचर हो जाते है। मन्त्री की ऐसी भाषा शोभनीय नहीं है। कर्मचारियों ने कहा कि कुछ दिन पहले फरीदाबाद में आगजनी होने से पे रोल कर्मचारी की मृत्यु हो गई और कौशल का कर्मचारी 60 प्रतिशत जल गया। उन्होंने मांगे की कि पिछले 6 वर्षों से बकाया वेतन जाए और पिछला भुगतान किया जाए। हाईकोर्ट के फैसले के अनुसार 31 दिसंबर 2025 को 10 वर्ष पूरे कर्मचारी को पक्का किया जाए। फायर ब्रिगेड की जो गाडिय़ां खस्ता हालत है उन्हें ठीक करवाया जाए।

लंबित मांगों को लेकर शिक्षा अधिकारी से मिला अध्यापक संघ का प्रतिनिधिमंडल

- बैठक में अधिकारियों के समक्ष अनेक मुद्दे रखे

हरिभूमि न्यूज ⏭ फतेहाबाद

हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ का प्रतिनिधिमंडल जिला प्रधान राजपाल मिताथल की अध्यक्षता में जिला शिक्षा अधिकारी संगीता बिश्नोई व जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी अनीता बाई से मिला। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य अध्यापकों की लंबे समय से अटकी हुई समस्याओं और प्रशासनिक मांगों पर चर्चा कर उनका समाधान निकालना था।

संघ के जिला सचिव देसराज माचरा ने मीटिंग के एजेंडे की जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में शिक्षा अधिकारियों के समक्ष अनेक मुद्दे रखे गए हैं। इनमें मांग की गई है कि जेबीटी से एचटी के पदों पर जल्द पदोन्नति की जाए और जेबीटी/एचटी की फाइनल सीनियरिटी लिस्ट जारी की जाए। जिले में 'बंचिंग' के कारण रुकी हुई एसीपी को तुरंत लागू किया जाए। जेबीटी से टीजीटी पद पर पदोन्नत हुए अध्यापकों और समान योग्यता रखने वाले शिक्षकों को एसीपी का लाभ दिया जाए। टीजीटी इंग्लिश अजय कुमार और विज्ञान अध्यापक देवराज, मेहुवाला स्कूल की 2024 से लंबित एसीपी का मामला सुलझाया जाए। जेबीटी प्रदीप कुमार, जीपीएस बिढाई खेड़ा की एसीपी, शैक्षणिक योग्यता पूरी होने के बावजूद पेंडिंग है, जिसे तुरंत जारी करने की मांग की गई। एमडीएम की कुकिंग कॉस्ट और कुक/हेल्पर का मानदेय जारी करने तथा मिड-डे मील में आ रही अन्य व्यवहारिक समस्याओं पर चर्चा हुई। पेंडिंग मेडिकल बिल, बच्चों के लिए ट्रांसपोर्ट अलाउंस और एलटीसी का बजट जारी करने की मांग की गई। मुख्यमंत्री सौंदर्यकरण प्रतियोगिता में जिला स्तर पर प्रथम रहे स्कूलों जीएमएस जाखन दादी व जीएमएस गदली की 2024 की पुरस्कार राशि और शतरंज प्रतियोगिता के प्रमाण पत्र वितरित किए जाएं।

फतेहाबाद। शिक्षा अधिकारियों से बातचीत करते अध्यापक संघ का प्रतिनिधिमंडल।

संगठन की डायरी व कैलेंडर भेंट किया

प्रतिनिधिमंडल ने मांग की कि प्रतिनियुक्ति पर तैनात अध्यापकों को बीएलओ ड्यूटी पर न लगाया जाए, ताकि शिक्षण कार्य प्रभावित न हो। मौलिक शिक्षा अधिकारी से मुलाकात के पश्चात प्रतिनिधिमंडल ने जिला शिक्षा अधिकारी संगीता बिश्नोई से भी मुलाकात की। उन्हें संगठन की डायरी और कैलेंडर भेंट किया गया और कक्षा 9 से 12 तक के अध्यापकों की एलटीसी के बजट को लेकर विशेष चर्चा की गई। बैठक में राज्य ऑडिटर सुरजीत दुसाद, जिला वरिष्ठ उप प्रधान डॉ. नीतू डूडेजा, जिला कार्यालय सचिव राधेश्याम, भूना खंड प्रधान दलबीर सिंह, भट्टू खंड प्रधान सतपाल सिंह ढाका और फतेहाबाद कार्यकारिणी सदस्य पूजा बुद्धिराजा सहित कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

छात्राओं को स्वास्थ्य के प्रति किया जागरूक

सिरसा। महिला स्वास्थ्य एवं जागरूकता कार्यक्रम में भाग लेती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

राजकीय नेशनल महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ द्वारा स्वास्थ्य जागरूक कार्यक्रम मासिक धर्म स्वच्छता एवं प्रजनन स्वास्थ्य और आधुनिक जीवनशैली से जुड़ी चुनौतियां विषय पर एक विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के लोक संपर्क अधिकारी प्रो. रमेश सोनी ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को महिला स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारियों से अवगत कराना तथा उनमें स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता विकसित करना था। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. अंजली नारंग ने छात्राओं को संबोधित करते हुए मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता बनाए रखने, संतुलित एवं पौष्टिक आहार ग्रहण करने, नियमित व्यायाम करने तथा मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ रखने के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आधुनिक जीवनशैली, तनाव और अनियमित दिनचर्या के कारण अनेक स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, जिनसे बचाव के लिए सही जानकारी और समय पर चिकित्सकीय परामर्श अत्यंत आवश्यक है।

ये रहे उपस्थित

इस अवसर पर डॉ. करमजीत कौर, राजदीप कौर, परमजीत कौर, गीता, मीनाक्षी, शोभा, सरोज बाला, नीरू बाला, निशा, बबलेश, साक्षी मेहता, सीमा रानी, मीनू रानी, प्रियंका, दीपावली देवी, पूनम सेठी, सरिता एवं काफी संख्या में छात्राएं उपस्थित रहीं।

भारत मंडपम में कांग्रेस ने किया देश का अपमानः यतींद्र सिंह

सिरसा। कांग्रेस पार्टी द्वारा भारत मंडपम में किए गए तथाकथित विरोध प्रदर्शन पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के जिलाध्यक्ष एडवोकेट यतींद्र सिंह ने कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी भाजपा विरोध में इतनी अंधी हो चुकी है कि उसने देश की गरिमा और प्रतिष्ठा को तार-तार करने का रास्ता चुन लिया है। जिस मंच पर अंतरराष्ट्रीय स्तर का कार्यक्रम आयोजित किया गया, वह किसी एक राजनीतिक दल का नहीं, बल्कि पूरे देश का गौरव था। ऐसे पवित्र मंच को राजनीतिक विरोध का अखाड़ा बनाना कांग्रेस की ओछी और गैर-जिम्मेदार राजनीति दर्शाता है। यह कृत्य केवल भाजपा विरोध नहीं, बल्कि सीधे तौर पर राष्ट्र विरोध की श्रेणी में आता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज भारत वैश्विक मंच पर अपनी अलग पहचान बना रहा है। भारत एक मजबूत सॉफ्ट पावर के रूप में उभर रहा है और पूरी दुनिया भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था, विकास मॉडल और सांस्कृतिक विरासत को सम्मान की दृष्टि से देख रही है। ऐसे समय में कांग्रेस पार्टी द्वारा अंतरराष्ट्रीय आयोजन के दौरान विरोध प्रदर्शन करना यह दर्शाता है कि वह भारत की प्रगति से असहज है। एडवोकेट यतींद्र सिंह ने यह भी कहा कि कांग्रेस पार्टी का यह व्यवहार किसी बाहरी ताकत के स्लीपर सेल की तरह प्रतीत होता है। यह आयोजन देश का था, न कि किसी पार्टी का। कांग्रेस का यह कृत्य यह साबित करता है कि वह भारत को आगे बढ़ता हुआ नहीं देखना चाहती और देश विरोधी तत्वों के इशारे पर कार्य कर रही है।

श्री हनुमान मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट का हिंदु सम्मेलन आज

सिरसा। अग्रसेन कॉलोनी स्थित श्री हनुमान मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट की एक बैठक मंदिर प्रांगण में हुई। मंदिर के प्रधान कुलदीप मित्तल ने बताया कि श्री हनुमान मंदिर चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में हिंदू समाज में एकता, जागरूकता, नई ऊर्जा का संचार, सामाजिक समरसता व पारंपरिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को बनाये रखने के मूल उद्देश्यों की उद्घोष को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हिन्दू सम्मेलन का आयोजन आगामी 22 फरवरी को किया जाएगा। सह संयोजक केके शर्मा ने बताया कि सम्मेलन का प्रारंभ अमृतवाणी पाठ से होगा, जोकि नालिनानंद गिरी जी महाराज सिरसा साधक, ऋषभ गाबा और उनकी टीम द्वारा किया जाएगा। तत्पश्चात हिंदू उद्घोष होगा, जिसमें देश भक्ति के गीतों का गुणगान होगा और स्कूली बच्चों द्वारा कविताओं की भी प्रस्तुति दी जाएगी। इस मौके पर मदनलाल शर्मा, राम जोशी, राजेश खत्री, बिहारी लाल बंसल, हिमांशु बंसल, कृष्ण गुप्ता, साकेत गोयल, सुरेश गोयल, ओमप्रकाश मेहता, अशोक मित्तल, तेजप्रकाश गुप्ता, सतपाल पारीक, अमित गोयल, लोकेश शर्मा, पंडित सुनील वैद आदि मौजूद थे।

सरपंच महेंद्र सिंह को सरपंच एसो. का प्रधान किया नियुक्त

ओढां। खंड ओढ़ा के सभी सरपंचों की शनिवार को खंड कार्यालय में एक बैठक बुलाई जिसमें लगभग सभी सरपंचों ने भाग लिया। इस बैठक में सरपंच एसोसिएशन के प्रधान व उपप्रधान का चुनाव किया गया और सर्वसम्मति से गांव रोहिडांवाली के सरपंच महेंद्र सिंह कालवा को सरपंच एसोसिएशन का प्रधान व गांव खोखर की सरपंच सतवीर कौर को उपप्रधान चुना गया। इससे पूर्व गांव मलिकपुरा की सरपंच अमनदीप कौर ने इस्तीफा दे दिया। अमनदीप कौर को भी 3 वर्ष पहले सरपंच एसोसिएशन का प्रधान सर्वसम्मति से बनाया गया था। खंड ओढ़ा के 37 सरपंचों में से महेन्द्र सिंह एक मात्र ऐसे सरपंच है जो कि लगातार दूसरी बार सरपंच का चुनाव जीते हैं। महेन्द्र सिंह को प्रधान व सतवीर कौर को उपप्रधान चुने जाने पर सभी सरपंचों ने हार पहनाकर बधाई देते हुए उनका मुंह मीठा करवाया। इस अवसर पर नवनियुक्त प्रधान व उपप्रधान ने कहा कि वह दोनों सभी साथियों का आभार व्यक्त करते हैं कि उन्हें जो जिम्मेदारी सौंपी है वो इनपर खरा उतरेंगे।

परीक्षित ने किया जेईई मेंस एंट्रेस क्लीयर

सिरसा। सिरसा के परिक्षित बंसल ने जेईई मेंस एंट्रेस टेस्ट (99.49) परसेंटाइल अंकों के साथ क्लीयर करते हुए अभिभावकों का नाम रोशन किया है। परीक्षित बंसल ने बताया कि दिल्ली के विद्या मंदिर क्लासेज से वह दो साल से कोचिंग ले रहा था। उसने अपनी तैयारी के लिए सोशल मीडिया से भी दूरी बनाकर रखी, ताकि पढ़ाई बाधित न हो सके। कोचिंग के अनुसार उसने दिन-रात मेहनत की और पहली बार में ही उसने जेईई मेंस एंट्रेस टेस्ट 99.49 परसेंटाइल अंकों के साथ क्लीयर कर अभिभावकों के सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। अब वह एडवांस की तैयारी कर रहा है और उसे विश्वास है कि वह अपनी मेहनत से उसे भी अवश्य क्लीयर करेगा।

कार्यक्रम | सीडीएलयू में स्वदेशी संकल्पना-आत्मनिर्भर भारत विषय पर हुई गोष्ठी

युवा राष्ट्र निर्माण के वाहक और वैश्विक मंच पर भारत के रोल मॉडलः सतीश

- पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से स्वदेशी के विभिन्न आयामों को रेखांकित किया

हरिभूमि न्यूज ⏭ सिरसा

स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संगठक सतीश कुमार ने कहा कि भारत की युवा जनसंख्या देश की सबसे बड़ी ताकत है। भारतीय युवा राष्ट्र निर्माण के वाहक और वैश्विक मंच पर भारत के रोल मॉडल हैं।

सतीश कुमार शनिवार को सिरसा के चौ. देवीलाल विश्वद्यिालय में आयोजित स्वदेशी संकल्पना-आत्मनिर्भर भारत विषय पर आयोजित गोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से उन्होंने स्वदेशी के विविध आयामों-विज्ञान एवं तकनीक में आत्मनिर्भरता, सुदृढ़ अर्थव्यवस्था, पर्यावरण-संवेदनशील विकास और वैश्विक दृष्टिकोण को रेखांकित किया। उन्होंने यह भी बताया कि नई दिल्ली में आयोजित एआई मेले में देश-विदेश की शीर्ष तकनीकी कंपनियों और विशेषज्ञों की सक्रिय भागीदारी भारत की तकनीकी क्षमता का प्रमाण है।

सिरसा। सीडीएलयू में गोष्ठी का शुभारंभ करते मुख्य वक्ता सतीश कुमार व अन्य।

उच्च शिक्षा में दक्षता पर बल दिया

सीडीएलयू के कुलपति प्रो. विजय कुमार ने उच्च शिक्षा में चरित्र, सृजनात्मकता और दक्षता की महत्ता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि चरित्र से आशय नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रभक्ति से है, जो विद्यार्थियों को संवेदनशील नागरिक बनाता है। सृजनात्मकता नवाचार, शोध और समस्या-समाधान की क्षमता को विकसित करती है, जिससे विद्यार्थी बदलते वैश्विक परिदृश्य में नए समाधान प्रस्तुत कर सकें। वहीं दक्षता ज्ञान, कौशल और व्यावहारिक प्रशिक्षण का समन्वय है, जो विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख और प्रतिस्पर्धी बनाता है। उन्होंने बताया कि सीडीएलयू इन तीनों स्तंभों पर आधारित शिक्षा प्रणाली को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत है। कुलपति ने कहा की तीन करोड़ रुपये से अधिक की लागत के साथ सीडीएलयू में इन्क्यूबेशन सेंटर विकसित किया जा रहा है जो इस जिले के उधमियों और किसानों के लिए वरदान साबित होगा। स्वदेशी जागरण मंच के प्रांत संगठक कुलदीप कुमार ने स्वदेशी विचारधारा के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना जनभागीदारी से ही साकार हो सकती है। स्वदेशी विचार भारत की आत्मा से जुड़ा आंदोलन है जो आत्मनिर्भरता के साथ-साथ सामाजिक समरसता को भी मजबूत करता है। इस मौके पर भाजपा नेता जगदीश चोपड़ा, प्रो. डीपी वारने, प्रो. रामेहर दीक्षित, पविकांत, राजकुमार, दर्शन चावला सहित अनेक शिक्षाविद् मौजूद रहे।

न्यूज डायरी

कुरुक्षेत्र में 23 से 27 तक होगा सांग महोत्सव

फतेहाबाद। सूचना, लोक संपर्क एवं भाषा विभाग हरियाणा द्वारा धनपत सिंह सांगी स्मृति पुरस्कार के उपलक्ष्य में 23 से 27 फरवरी तक सांग महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम प्रतिदिन सुबह 11 बजे से कलाकृति भवन, हरियाणा कला परिषद, नजदीक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र में आयोजित किया जाएगा। जिला सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी दिनेश कुमार ने बताया कि सांग महोत्सव में हरियाणा की समृद्ध लोकनाट्य परंपरा सांग की प्रस्तुतियां प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए कलाकारों द्वारा दी जाएंगी। पांच दिवसीय इस सांस्कृतिक आयोजन में कुल 24 सांग प्रस्तुत किए जाएंगे, जिनमें ऐतिहासिक, पौराणिक एवं लोककथाओं पर आधारित कथानक शामिल हैं।

बरसाती पानी की निकासी के लिए मास्टर प्लान की मांग

रतिया। सर्व समाज सभा रतिया की मासिक बैठक प्रधान सतपाल जिन्दल की अध्यक्षता में बाबा नामदेव धर्मशाला में आयोजित हुई। बैठक में अनेक मुद्दों पर चर्चा हुई और प्रस्ताव पास किए गए। प्रेस सचिव हैप्पी सिंह सेठी ने बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास करते हुए कहा कि वेयर हाऊस मण्डी रोड व टोहाना रोड को जनहित में बाहर बनाए जाएं। वेयर हाउस के स्थान पर सभी बैंक काम्पलैक्स व पार्किंग बनाने की मांग को विधायक रतिया व अधिकारीयों के मार्फत सरकार के पास मुद्दे रखने पर सहमति बनी। सर्वसम्मति से शहर में बरसाती पानी की निकासी के लिए मास्टर प्लान बना कर बरसाती पानी की समस्या को हल करवाने की प्रवल मांग उठी।

ढाणी बबनपुर से शराब सहित आरोपी काबू

फतेहाबाद। नशा तस्करों और अवैध शराब बेचने वालों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत, सीआईए फतेहाबाद की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर गांव ढाणी बबनपुर में छापेमारी कर एक व्यक्ति को भारी मात्रा में अवैध शराब के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान गुलाब सिंह पुत्र गेब सिंह, निवासी ढाणी बबनपुर, रतिया के रूप में हुई है। सीआईए फतेहाबाद प्रभारी उप निरिक्षक वेदप्रकाश ने बताया कि एचसी मनदीप कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम गश्त के दौरान बस अड्डा गांव बादलगढ़ में मौजूद थी। इसी बीच मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि गांव ढाणी बबनपुर निवासी गुलाब सिंह अपने घर के बाहर अवैध शराब बेचने का धंधा कर रहा है पुलिस ने तुरंत मौके पर दबिश देकर आरोपी को प्लास्टिक की कैनी सहित दबोच लिया।

बोर्ड परीक्षाओं को लेकर धारा 163 के आदेश जारी

फतेहाबाद। जिलाधीश डॉ. विवेक भारती ने जिला में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी की 10वीं, 12वीं व डीएलएड परीक्षाओं का संचालन सुचारू रूप से संपन्न करवाने व कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए परीक्षा के दौरान सभी परीक्षा केंद्रों पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के तहत धारा 163 लागू करने के आदेश जारी किये हैं। जिला में 25 फरवरी से 1 अप्रैल तक विभिन्न परीक्षा केंद्रों में ये परीक्षाएं आयोजित होंगी। जिलाधीश द्वारा जारी आदेशों के अनुसार परीक्षा केंद्रों की 500 मीटर की परिधि में किसी भी प्रकार के हथियार ले जाने, किसी भी अनाधिकृत व्यक्ति के परीक्षा केंद्र में प्रवेश करने पर प्रतिबंध रहेगा। इसके अलावा परीक्षा केंद्रों की 200 मीटर की परिधि में सभी फोटो स्टेट की दुकानें बंद रखने, वाहन पार्क करने, सभी प्रकार के यंत्र जो वाई फाई या ब्लूटूथ से जुड़ते हो के प्रयोग, परीक्षा केंद्रों की 200 मीटर की परिधि में लाउडस्पीकर के प्रयोग तथा गैर कानूनी रूप से एकत्रित होने और अन्य अवांछित गतिविधियों पर प्रतिबंध रहेगा। आदेशों की अवहेलना करने पर संबंधित व्यक्ति पर भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 223 के अनुसार दंड का भागीदार होगा।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि रामकुमार पुत्र रावता पुत्र बिन्जा निवासी भट्टू कलां उप तहसील भट्टू कलां जिला फतेहाबाद ने एक दरखास्त बाबत मृत्यु उपरांत वसीयत मिनजानिब मृतक बिन्जा पुत्र टोडा पुत्र किशन लाल निवासी भट्टू कलां, उप तहसील भट्टू कलां, जिला फतेहाबाद को पंजीकृत करवाने बारे इस कार्यालय में दी है। इस वसीयत जबानी तहरीर के बारे में किसी को कोई एतराज हो तो वह इस विज्ञापन के जारी होने के एक महीने के अन्दर-अन्दर असलतन या वकालतन पेश होकर अपने एतराज इस कार्यालय में कर सकता है। बाद गुजरने मियाद कोई एतराज न आता है तो इस वसीयतनामा को नियम अनुसार पंजीकृत कर दिया जाएगा। यह विज्ञापन आज दिनांक 20-02-2026 को मेरे हस्ताक्षर वा इस कार्यालय की मोहर के साथ जारी किया जाता है। -सब रजिस्ट्रार भट्टू कलां

खबर संक्षेप

पार्किंग में दबिश देकर आरोपी को हेरोइन सहित दबोचा

फतेहाबाद। एंटी नारकोटिक सैल की टीम ने भट्टू रोड स्थित लाइफ केयर अस्पताल की पार्किंग से एक नशा तस्कर को 5.80 ग्राम हेरोइन के साथ रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान ईशान कुमार उर्फ काकू निवासी नहर कॉलोनी फतेहाबाद के रूप में हुई। एंटी नारकोटिक सैल के प्रभारी निरिक्षक यादवेन्द्र ने बताया कि एएसआई राम अवतार के नेतृत्व में पुलिस टीम नशीले पदार्थों की रोकथाम हेतु भट् टू रोड पर मौजूद थी।

सीआईए ने सट्टेबाज को रंगे हाथ पकड़ा

फतेहाबाद। सीआईए टोहाना पुलिस टीम ने अनाज मंडी क्षेत्र में छापेमारी कर एक सट्टा खाईवाल को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से नकदी और सट्टा पर्चियां बरामद की हैं। आरोपी की पहचान दीपक पुत्र ओमप्रकाश, निवासी मॉडल टाउन, हिसार के रूप में हुई है। वह अब गांव बुआन, फतेहाबाद में रहता है। सीआईए टोहाना प्रभारी अशोक कुमार ने बताया कि, एसआई सुरेन्द्र सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम रेलवे रोड पर गश्त कर रही थी। इसी दौरान गुप्त सूचना मिली कि नई अनाज मंडी के पास एक व्यक्ति छप्पर के नीचे सरेआम सट्टा खाईवाली कर रहा है और लोगों को एक के बदले 80 रुपये देने का लालच देकर सट्टा लगवा रहा है।

एक्सचेंज के पास हेरोइन के साथ नशा तस्कर पकड़ा

फतेहाबाद। अपराध शाखा रतिया की टीम ने रतिया में गश्त के दौरान एक युवक को हेरोइन के साथ गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सुरेन्द्र कुमार पुत्र पाला राम, निवासी वाल्मीकि मोहल्ला, रतिया के रूप में हुई है। सीआईए रतिया प्रभारी रिछफाल ने बताया पुलिस टीम लोहारी चौक पर गश्त कर रही थी। इसी दौरान गुप्त सूचना मिली कि वाल्मीकि मोहल्ला निवासी सुरेन्द्र कुमार, जो हेरोइन बेचने का अवैध धंधा करता है, बीएसएनएल एक्सचेंज की दीवार के पास ग्राहकों की फिराक में खड़ा है।

नीलगाय को बचाने की कोशिश में कार दुर्घटनाग्रस्त

सिरसा। राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर 9 पर गांव मिठड़ी के समीप कार के आगे अचानक नीलगाय आने पर उसको बचाने की कोशिश में कार अनियंत्रित होकर सडक़ से नीचे उतरकर पलट गई। हादसे में कार चालक घायल हो गया, जिसे लोगों ने अस्पताल पहुंचाया। हादसे में कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। जानकारी अनुसार मंडी डबवाली में नगरपालिका में कार्यरत क्लर्क प्रवीण कुमार निवासी सिरसा अपनी कार में सवार होकर बीती शाम डबवाली से सिरसा जा रहा था।

विकलांग को शादी का झांसा देकर ठगे सात लाख

सिरसा। पुलिस ने एक दिव्यांग व्यक्ति को शादी व गिरफ्ट का झांसा देकर करीब सात लाख रुपये ठगने वाले दो आरोपियों को फरीदाबाद क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान फरीदाबाद निवासी राहुल कुमार व राहुल शर्मा के रूप में हुई है। सिरसा के एसपी दीपक सहारण ने शनिवार को बताया कि जिले के गांव बीरूवालागुढा निवासी चेतराम की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज किया था। पीड़ित चेतराम ने शिकायत में बताया कि वह बिजली करंट लगने के कारण सौ प्रतिशत विकलांग है।

वाहन की टक्कर से ट्रांसफार्मर गिरा, केस दर्ज

सिरसा। शहर के रंगड़ी रोड पर लगे 200 केवीए के ट्रांसफार्मर को अज्ञात वाहन ने टक्कर मारकर क्षतिग्रस्त कर दिया। इस संबंध में बिजली निगम द्वारा पुलिस को शिकायत देकर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज करवाया गया है। कर्मचारियों ने क्षेत्र प्रभारी मदन लाल जेई को सूचना दी कि रंगड़ी रोड पर लगा 200 केवीए का ट्रांसफार्मर गिर गया है। जेई ने टीम के साथ मौके पर पहुंचकर जांच की तो पता चला कि किसी अज्ञात वाहन ने ट्रांसफार्मर के ढांचे को टक्कर मार दी, जिससे पोल टूट गया और ट्रांसफार्मर गिरने से सारा तेल बह गया।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर शिक्षण संस्थानों में कार्यक्रमों का आयोजन

मातृभाषा हमारे व्यक्तित्व, संस्कार व सांस्कृतिक पहचान की आधारशिला

मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बौद्धिक विकास अधिक प्रभावी होता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। महिला कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते प्राचार्य डॉ. शत्रुजीत सिंह। फोटो : हरिभूमि

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर शनिवार को सिरसा जिले के शिक्षण संस्थानों में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सिरसा के राजकीय महिला महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शत्रुजीत सिंह ने कहा कि मातृभाषा हमारे व्यक्तित्व, संस्कार और सांस्कृतिक पहचान की आधारशिला है। यह केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी सोच, संवेदनाओं और परंपराओं की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन है।

डॉ. प्रीत कौर ने कहा कि मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करने से बौद्धिक विकास अधिक प्रभावी होता है तथा विद्यार्थी अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं। उन्होंने कहा कि वैश्विक परिदृश्य में अनेक भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है, किंतु अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान और प्रतिबद्धता बनाए रखना उतना ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने छात्राओं को मातृभाषा के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। प्रोफेसर डॉ. विक्रमजीत सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि मातृभाषा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है और इसे सहेजना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। राजकीय नेशनल महाविद्यालय सिरसा में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्राचार्या डॉ. अनीता सामाजिक एवं भाषाई पहचान हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है और देश प्रेम की भावना से उत्प्रेरित करती है। जन्म लेने के बाद मनुष्य जो प्रथम भाषा सीखता है उसे मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा में मनुष्य अपने भावों को सरलता से अभिव्यक्त कर सकता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में मातृभाषा को शिक्षा व्यवस्था में विशेष स्थान दिया गया है। इस शिक्षा नीति के अनुसार बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा उनकी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में होनी चाहिए इससे बच्चों की समझदारी बेहतर होती है और वह सीखने में अधिक रुचि दिखाते हैं। मातृभाषा में पढ़ाई से न सिर्फ ज्ञान की गहराई बढ़ती है बल्कि भाषा की संस्कृति और विरासत को भी संरक्षित किया जा सकता है।

> छात्राओं को मातृभाषा के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया।

मातृभाषा व्यक्ति की पहली भाषा

राजकीय महाविद्यालय ऐलनाबाद में आयोजित अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर प्राचार्य डॉ. सज्जन कुमार ने कहा कि मातृभाषा व्यक्ति की पहली भाषा होती है, जो उसे जन्म से ही परिवार और समाज से सीखने को मिलती है। यह व्यक्ति की पहचान, संस्कृति, और भावनाओं का अभिन्न हिस्सा होती है। मातृभाषा सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को सहज और प्राकृतिक बनाती है। प्रो.सुरेश कुमारी ने भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला तथा डा. जोगिंद्र सिंह ने अपने व्याख्यान में कहा कि हमें जितनी अधिक भाषाओं का ज्ञान होगा जिंदगी जीने की समर्था बढ़ती है तथा भाषा मनुष्य को संवेदनशील बनाती है।

शब्दों से ही मित्र बनते हैं और दुश्मन भी: अरुण

रतिया। रतिया जैन स्थानक में मौजूद श्रद्धालु। फोटो : हरिभूमि

- रविवार को साधिका का बड़ी दीक्षा समारोह किया जाएगा आयोजित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रतिया

अनाज मंडी रोड स्थित जैन स्थानक में विराजमान अरुण मुनि महाराज ने कहा कि जिंदगी में परमात्मा को हमेशा साथ रखना चाहिए क्योंकि परमात्मा हमें जीवन में मनोबल देता है और अंधकार को प्रकाशमय बनाता है उन्होंने कहा कि परमात्मा से ही हमें जीवन जीने का ज्ञान मिलता है और परमात्मा द्वारा दिखाएं मार्ग पर चलकर ही अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

उन्होंने आए हुए श्रद्धालुओं से आह्वान करते हुए कहा कि मनुष्य को हमेशा विवेकपूर्वक बोल ही बोलने चाहिए। शब्द ही ऐसी चीज है जो की शांति भी लाते हैं और क्रांति भी लाते हैं शब्दों से ही मित्र भी बनते हैं और शब्दों से ही दुश्मन बन जाते हैं इसलिए शब्दों पर कंट्रोल करना जरूरी है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि समझ पूर्वक न बोलने के कारण ही बड़ी से बड़ी महाभारत खड़ी हो जाती है इसलिए शब्दों को मर्यादा के साथ बोलना चाहिए और प्रत्येक शब्द के साथ जी लगाना चाहिए।

श्रद्धालुओं की उमड़ रही भीड़

अरुण मुनि महाराज ने बताया कि रविवार को रतिया जैन स्थानक में साधिका का की बड़ी दीक्षा आयोजित की जाएगी और सोमवार को न्यू टाउन में प्रवचन करने की भावना है साथ ही वह गांव जल्लोपुर में भी जाना चाहते हैं। जैन स्थानक में जैन मुनियों के दर्शन करने के लिए हरियाणा ही नहीं दिल्ली उत्तर प्रदेश पंजाब सहित समस्त उत्तर भारत से सैकड़ो श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ रही है और स्थानक हर समय खचाखच श्रद्धालुओं की भीड़ से भरा रहता है प्रवचनों में भी रतिया के अलावा आसपास के शहरों से सैकड़ो श्रद्धालु भाग ले रहे हैं। वहीं रविवार को आयोजित होने वाली साधिका की बड़ी दीक्षा के लिए भी जैन समाज ने तैयारियां शुरू कर दी है।

इग्नू टीम ने अभियान चलाकर छात्रों को प्रवेश के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। महिला कॉलेज इग्नू की टीम विद्यार्थियों को दाखिले के लिए प्रेरित करते हुए।

उच्च शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से राजकीय महिला महाविद्यालय सिरसा में संचालित इग्नू स्टडी सेंटर द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के जनवरी 2026 सत्र में दाखिले को लेकर एक व्यापक जागरूकता अभियान चलाया गया। इग्नू स्टडी सेंटर के कोऑर्डिनेटर डॉ. विक्रमजीत सिंह ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य युवाओं, विशेषकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से डिग्री और रोजगारपरक डिप्लोमा प्राप्त करने के प्रति प्रोत्साहित करना है। इस अभियान के तहत इग्नू अध्ययन केंद्र सिरसा के स्टाफ ने न केवल महाविद्यालय प्रांगण में बल्कि सिरसा शहर में स्थित विभिन्न प्राइवेट लाइब्रेरियों में जाकर छात्र-छात्राओं से सीधा संवाद किया। डॉ. विक्रमजीत सिंह, असिस्टेंट कोऑर्डिनेटर डॉ. सतपाल और असिस्टेंट ललित कुमार ने विद्यार्थियों के बीच जाकर उन्हें बताया कि वे अपनी वर्तमान पढ़ाई, नौकरी या प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के साथ-साथ इग्नू से मान्यता प्राप्त डिग्री या डिप्लोमा कैसे हासिल कर सकते हैं।

तहसीलों में लगाए गए विशेष कैंप, 502 इंतकाल स्वीकृत

सिरसा। जिला की सभी तहसीलों/उप तहसीलों में म्यूटेशन व इंतकाल संबंधी मामलों के समाधान के लिए शनिवार को विशेष कैंपों का आयोजन किया गया। इन विशेष शिविरों में संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों ने प्राप्त आवेदनों के आधार पर प्राथमिकता के साथ कार्रवाई की। आयोजित कैंपों के दौरान कुल 502 इंतकाल स्वीकृत किए गए। तहसील सिरसा में सर्वाधिक 140 इंतकाल स्वीकृत हुए, जबकि कालांवाली में 110 और ऐलनाबाद में 81 मामलों का निपटारा किया गया। इसके अलावा रानियां में 53, डबवाली में 48, गोरीवाला में 38 तथा नाथूसरी चौपटा में 32 इंतकाल स्वीकृत किए गए।

एआई इम्पैक्ट समिट में शर्टलेस प्रदर्शन के खिलाफ भाजपा युवा मोर्चा का उग्र प्रदर्शन

- यह लोकतांत्रिक विरोध नहीं, बल्कि अराजकता फैलाने का प्रयास है : जोड़ा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। राहुल गांधी का पुतला लेकर प्रदर्शन करते भाजपा कार्यकर्ता।

कांग्रेस युवा विंग के कार्यकर्ताओं द्वारा दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित एआई इम्पैक्ट समिट में प्रवेश कर शर्ट उतारकर प्रदर्शन किए जाने के विरोध में शनिवार को भाजपा युवा मोर्चा फतेहाबाद द्वारा प्रदर्शन कर राहुल गांधी का पुतला फूंका गया। इस विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व भाजपा युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष बिट्टू गुर्जर ने किया। भाजपा के जिला अध्यक्ष एडवोकेट प्रवीण जोड़ा भी मौजूद रहे। उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं की इस शर्मनाक हरकत की कड़ी निंदा की।

भाजपा नेताओं ने कहा कि कांग्रेस द्वारा इस प्रकार नग्न होकर प्रदर्शन करना न केवल अनुचित है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, नैतिकता और देश की गरिमा के भी विरुद्ध है। उन्होंने कहा कि एआई समिट जैसे वैश्विक तकनीकी मंच पर इस तरह का शर्टलेस प्रदर्शन पूरी दुनिया में भारत की छवि को धूमिल करने वाला है।

भूना। सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी विद्यार्थी।

क्विज, ग्रामर टेस्ट और मनोरंजक खेलों में छात्रों ने दिखाया उत्साह

भूना। आदर्श भारती स्कूल में शनिवार को सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी एवं बौद्धिक विकास से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ स्कूल के प्रबंध निदेशक सुभाष बिश्नोई और स्कूल प्रबंधन समिति के अध्यक्ष राजेश खीचड़ ने संयुक्त रूप से किया, जबकि अध्यक्षता प्राचार्य कृष्ण कुमार धारणिया ने की। कनिष्ठ वर्ग के विद्यार्थियों ने सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, हिंदी व्याकरण प्रश्नोत्तरी और इंग्लिश ग्रामर क्विज प्रतियोगिताओं में छात्रों ने अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रदर्शन किया। इसके साथ ही लड्डू खाओ, केले खाओ, गुब्बारे फुलाओ, गाना गाओ और डांस करो जैसी मनोरंजक गतिविधियां भी आकर्षण का केंद्र रहीं। प्रतियोगिताओं के परिणामों में कनिष्ठ वर्ग में प्रथम स्थान कक्षा 5वीं, द्वितीय स्थान कक्षा 6वीं तथा तृतीय स्थान कक्षा 7वीं और 8वीं को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया।

एनवाईसी चयन प्रक्रिया में धांधली को लेकर निकाला रोष मार्च

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

सिरसा। जिला युवा अधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए यूथ क्लब एसोसिएशन।

यूथ क्लब एसोसिएशन ने जिला युवा अधिकारी को ज्ञापन सौंप कर एनवाईसी चयन प्रक्रिया में धांधली की आशंका जताते हुए जांच की मांग की हैं। यूथ क्लब सिरसा के बैनर तले विभिन्न युवा संगठनों ने शहीद भगत सिंह स्टेडियम में रोष मार्च निकालते हुए प्रदर्शन किया।

इसके बाद सभी मेरा युवा भारत के कार्यालय में पहुंचे और रोष व्यक्त किया। क्लब के संस्थापक लवप्रीत खैरकां ने कहा कि इस वर्ष चयन प्रक्रिया की सूचना युवाओं तक पारदर्शी ढंग से नहीं पहुंचाई गई, जिससे अधिकांश युवा आवेदन करने से वंचित रह गए। हर वर्ष 'मेरा युवा भारत' के तहत जिले में 16 एनवाईसी स्वयंसेवकों का चयन किया जाता है और इसकी सूचना ऑनलाइन, ऑफलाइन तथा समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक रूप से प्रसारित की जाती रही है। लेकिन इस बार चयन प्रक्रिया की कोई सार्वजनिक सूचना जारी नहीं की गई। जहां पिछले वर्षों में करीब 800 से 900 युवा पोर्टल पर पंजीकरण करते थे, वहीं इस वर्ष मात्र 27 युवाओं ने ही आवेदन किया है, जिससे चयन प्रक्रिया की पारदर्शिता पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

डॉग स्क्वायड की पैनी सूंघ से पीरूवाली बस्ती में अवैध गोलियां बरामद

फतेहाबाद। जिला पुलिस द्वारा चलाए जा रहे नशा विरोधी अभियान के तहत डॉग स्क्वायड टीम एवं रतिया शहर पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में पीरूवाली बस्ती में छापेमारी कर अवैध नशीली गोलियां बरामद की गई है। योजनाबद्ध सर्च अभियान के दौरान टीम ने विक्रम कुमार के घर पर दबिश दी। डॉग स्क्वायड की सूंघने की विशेष क्षमता और टीम की पेशेवर कार्यशैली के चलते घर के अंदर छुपाकर रखे गए सिग्नेचर ब्रांड की नशीली गोलियों के 4 डिब्बे बरामद किए गए। प्रारंभिक जांच में गोलियां अवैध रूप से रखी जाना पाया गया, जिसके आधार पर संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट के तहत सख्त कानूनी कार्रवाई अमल में लाई जा रही है।

रतिया। पीरूवाली बस्ती के मकान में तलाशी लेते पुलिस कर्मचारी।

शराब से लदी पिकअप गाड़ी पकड़ी, दो किए गिरफ्तार

- शराब ठेके पर उतारी जा रही थी अवैध शराब

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सिरसा

पुलिस ने शहर क्षेत्र से एक पिकअप गाड़ी से लाखों रुपये की अवैध शराब पकड़ी है। पुलिस ने मौके से दो युवकों को भी गिरफ्तार किया है। शहर थाना प्रभारी ने शनिवार को बताया कि पुलिस को सूचना मिली कि खाजाखेड़ा रोड स्थित एक शराब ठेके पर अवैध शराब उतारी जा रही है। पुलिस ने मौके पर दबिश देकर करीब साढ़े पांच लाख रुपये की 39 पेटी अंग्रेजी शराब तथा 100 पेटी बीयर बरामद की है। पुलिस ने पिकअप गाड़ी सवार युवकों से गाड़ी के कागजात तथा शराब संबंधी लाइसेंस दिखाने को कहा तो वे कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए, जिस पर पुलिस ने दोनों को मौके पर गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों की पहचान सिरसा के संदेश कुमार व फतेहाबाद जिला निवासी रामनिवास के रूप में हुई है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी अवैध रूप से शराब की ढुलाई कर रहे थे।

परिवार में किसी से भी भेद बुद्धि से व्यवहार न करो

गुरुदेव के पास मन लाओ, पर जाओ तनावमुक्त होकर: स्वामी दिव्यानंद

> मन प्रसन्नता से भरा है तो समझ लो कि शिव तत्व जुबान से जीवन में आ गया है

हरिभूमि न्यूज ▶▶ फतेहाबाद

फतेहाबाद। गीता मंदिर में पूजा अर्चना करवाते स्वामी दिव्यानंद महाराज।

श्री गीता भवन मॉडल टाऊन फतेहाबाद में वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित शिव पुराण कथा एवं महाप्रभु सद्गुरू देव प्राकट्य महोत्सव में डॉ. स्वामी दिव्यानंद महाराज ने कहा कि नारद जी ब्रह्मा जी के मानसपुत्र हैं, ब्रह्माजी ने उन्हें अशांत देखा अच्छा नहीं लगा। बोले, घबराओ नहीं, मैं तुम्हें शिव पुराण सुनाता हूं, अवसाद दूर होगा। परिवार को बोझ मत समझो, उन्हें भी हल्का करो स्वयं भी हलके रहो। गुरूदेव पास आकर उनके वचन सुनकर शांत मन वापस लेकर जाओ। परिवार में किसी से भी भेद बुद्धि से व्यवहार न करो। अन्यथा कलेश से बच नहीं पाओगे। यही सोमनाथ ज्योतिर्लिंग की कथा का सार है। उन्होंने कहा कि मन प्रसन्नता से भरा है तो समझ लो कि शिव तत्व जुबान से जीवन में आ गया है। यह सब तभी होगा, जब हम तन और मन दोनों के साथ गुरूदेव के पास होंगे। मन की कोशिश तो होगी कि यहां से मैं भागूं, तभी तो टिकता नहीं यह मन। इस मन को पता है कि गुरूदेव के पास मन की धुलाई होती है, अहंकार पर ज्ञान के हथोड़े से प्रहार होता है।

कार्यक्रम में ये रहे मौजूद

इसके बाद स्वामी दिव्यानंद महाराज ने मॉडल टाऊन स्थित सीनियर सैकेंडरी मॉडल स्कूल के मुख्य प्रवेश द्वार का भी उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्कूल का संचालन कर रही फतेहाबाद एजुकेशन सोसाईटी के प्रधान डॉ. नीरज शर्मा, संरक्षक एनडी मित्तल, पूर्व विधायक स्वतंत्र बाला चौधरी, सचिव अरुण बंसल सीए, कोषाध्यक्ष विजय मोंगा, वरिष्ठ सदस्य एडी बजाज, राजीव बतरा, टेकचंद मिढ़ा, सुनील चौधरी, मोहन लाल जुनेजा, डॉ मनोहर मेहता, धीरज लूथरा, उमंग सरदाना, गिरीश चौधरी, नरेश सरदाना, डॉ राकेश बजाज, ब्राह्मण सभा के प्रधान रामनिवास शर्मा, टीडी मेहता, डॉ महेन्द्र मेहता, डॉ यजूर बतरा, गोपाल चौधरी, वेद बतरा, कंवल चौधरी ने स्वामी दिव्यानंद का स्कूल प्रांगण में पहुंचने पर स्वागत किया। डॉ. स्वामी दिव्यानंद महाराज ने कहा कि शिक्षा और विद्या दोनों अलग चीज है।

कुछ साल पहले तक वर्क फ्रॉम होम के बारे में कम ही लोग जानते थे। लेकिन आज कंडीशन इससे भी एक कदम आगे बढ़कर वर्क फ्रॉम एनीवेयर तक पहुंच चुकी है। कई सर्विस सेक्टर्स ऐसे हैं, जिसमें यह वर्क मोड खूब पॉपुलर हो चुका है। इस मोड के अनेक फायदे हैं तो कुछ कमियां भी हैं। इन सबके बारे में आप जरूर जानना चाहेंगे।

कहीं से भी काम करने की आजादी

वर्क फ्रॉम एनीवेयर

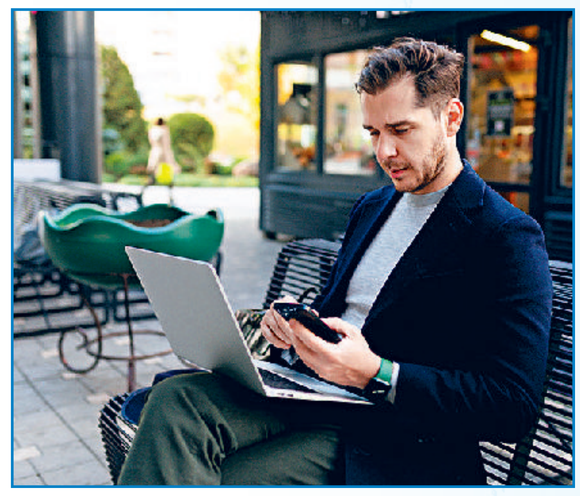

कवर स्टोरी / कीर्तिशेखर

करीब पांच वर्ष पहले कोरोना महामारी ने कार्यशैली में जिस बदलाव को मजबूरी में शुरू कराया था, वह अब स्थायी जीवनशैली का विकल्प बनता जा रहा हैं। पहले सवाल था- क्या घर से काम करना संभव है? अब सवाल बदल चुका है- क्यों न कहीं से भी काम किया जाए? इसी सवाल से जन्म होता है, वर्क फ्रॉम एनीवेयर की अवधारणा का यानी, ऐसा काम जिसे करने के लिए न तो ऑफिस की दीवारें जरूरी हैं, न किसी तय शहर की सीमा, बस आपका अपना लैपटॉप हो, इंटरनेट कनेक्शन हो और थोड़ी-सी मानसिक एकाग्रता, इसके बाद कहीं पर भी आप अपना ऑफिस वर्क शुरू कर सकते हैं।

ऐसे बदलती गई कार्यशैली: वर्क फ्रॉम होम ने लोगों को यह सिखाया कि जरूरी नहीं कि हर काम मीटिंग रूम या ऑफिस डेस्क पर ही बैठकर किया जाए। इस अवधारणा ने यह भी बताया कि प्रोडक्टिविटी का मतलब केवल कुर्सी पर बैठना नहीं होता। आउटपुट ज्यादा मायने रखता है। इसके बाद लोगों ने महसूस किया कि अगर घर से काम करना संभव है, तो फिर इंटरनेट की बदौलत कहीं से भी काम करना संभव है। कोरोना और उसके बाद से ही लोगों ने घूमने गए हिल स्टेशनों, समुद्र किनारे या शहर से अपने गांव जाकर घर के एक कोने में बैठकर देश-विदेश की मल्टीनेशनल कंपनियों का काम करने लगे। यहीं से वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट व्यवहार में उतरा।

इसलिए चुन रहे यह तरीका: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट पॉपुलर होने की कई वजहें हैं। महानगरों में भीड़ बहुत बढ़ती जा रही है। भारी-भरकम किराए के बाद ही किराए का मकान मिलता है, बल्कि वहां जिंदगी भी बहुत मुश्किल भरी हो जाती है। ऑफिस आने-जाने में रोज ट्रैफिक जाम से पाला पड़ता है। परिवार साथ न होने की वजह से खाने की समस्या होती है। घर और परिवार से दूर रहने के कारण हर समय मानसिक अशांति रहती है। इस तरह काम तो होता है, पर जीवन बेचैन रहता है। इसलिए युवाओं का कहना है कि अब वो जीवन के लिए काम करना चाहते हैं, काम के लिए जीवन की हायतौबा नहीं झेलना चाहते। नतीजा यह है कि नई पीढ़ी के बहुत से लोग वर्क फ्रॉम एनीवेयर का विकल्प बड़ी सहजता से चुन रहे हैं, क्योंकि यह विकल्प उन्हें भरपूर आजादी का एहसास कराता है।

इस कॉन्सेप्ट का मेन टार्गेट: वर्क फ्रॉम एनीवेयर के बारे में इस बात को समझना जरूरी है कि इसका मतलब डिजिटल घुमक्कड़ी नहीं है, न ही इसका मतलब है कि कहीं भी घूमते-फिरते रहें और जब मौका मिले या मन करे तो काम कर लें। अगर इस धारणा का मतलब यह हो जाएगा, तब तो काम करना प्राथमिकता नहीं रह जाएगी। प्रोफेशनल्स के लिए उनका वर्क बहुत मायने रखता है। ऐसे में इंटरनेट ने बौद्धिक काम करने वाले लोगों को यह सुविधा तो दी ही है कि अगर हिल स्टेशन पर घूमने जाएं, तो समय निकालकर वहां से भी अपना काम कर सकें। मां-बाप के पास गांव जाएं तो वहां भी साथ अपना काम लेकर जाएं और कहीं किसी जरूरी यात्रा पर निकल रहे हों तो भी अपना काम अपने साथ रख सकते हैं।

इन फील्ड्स में है सफल यह मॉडल: वर्क फ्रॉम एनीवेयर का कॉन्सेप्ट सर्विस सेक्टर में ही संभव है कि आप कहीं से भी अपनी विशेषज्ञता संबंधी सेवाएं अपने नियोक्ता को दे सकें। हर काम वर्क फ्रॉम एनीवेयर के ढांचे में फिट नहीं होता है। बहरहाल, जो काम इस मोड में सही से किए जा सकते हैं, वो क्षेत्र हैं- आईटी और सॉफ्टवेयर, डिजिटल मार्केटिंग, एडिटिंग, कंटेंट राइटिंग, डिजाइनिंग, ऑनलाइन टीचिंग, कस्टमर सपोर्ट-कंसल्टेंसी, एचआर असिस्टेंस और फाइनेंस एनालिसिस भी इस वर्क पैटर्न से संभव है। दूसरे शब्दों में जिन कामों में फिजिकल उपस्थिति या मशीनरी की मौजूदगी की जरूरत नहीं होती, उन क्षेत्रों में यह मॉडल तेजी से अपनाया जा रहा है।

एंप्लॉई-एंप्लॉयर दोनों खुश: कंपनियां इसलिए इस मॉडल को स्वीकार कर रही हैं, क्योंकि इससे उनको भी फायदा है। इससे उन्हें ऑफिस स्पेस पर खर्च नहीं करना पड़ता। ऑफिस चलाने के लिए जो एस्टेब्लिशमेंट खर्च होते हैं, उनसे भी बचाव हो जाता है और सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोगों को भर्ती करने के लिए पूरी दुनिया का दायरा मिल जाता है। कर्मचारी भी इससे संतुष्ट रहते हैं, क्योंकि हर रोज घर से काम करने के लिए नहीं निकलना पड़ता और न ही यात्रा करने की जो परेशानियां और तनाव होती हैं, उनसे निपटना पड़ता है।

कंपनियां भी अब इस बात को समझ चुकी हैं कि अगर सहूलियतों के बीच कर्मचारी को काम करने का मौका मिलता है तो उसका परफॉर्मेंस बेहतर होता है। इसलिए वे ऐसे कर्मचारियों को रखना पसंद करती हैं। इससे कर्मचारियों को सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि उनके रहने और दूसरी जगह पर जाकर खाने-पीने की जो भारी भरकम लागत आती है, उससे छुटकारा मिल जाता है। घर से ऑफिस तक जाने में जो समय लगता है, उससे भी मुक्ति मिल जाती है। यह बचा हुआ समय व्यक्तिगत रुचियों का आनंद लेने और आराम करने के लिए इस्तेमाल होता है। कह सकते हैं इस अवधारणा से काम कराने वाला भी खुश होता है और काम करने वाला भी खुश और दोनों को फायदा होता है।

प्रोफेशनल्स का बचता है टाइम: काम की इस अवधारण का एक फायदा यह है कि लोग दिन में ऑफिस का काम करते हैं और फिर जो उनका दफ्तर तक जाने और आने का समय बचता है। उस समय का उपयोग बागवानी करने, संगीत सीखने, लेखन करने या अपने किसी शौक को पूरा करने के लिए लगाते हैं।

मौजूद हैं कुछ चुनौतियां: इस वर्क मोड में सबसे पहली चुनौती तो यह है कि ये काम वहीं हो सकता है, जहां इंटरनेट की सुविधा अच्छी हो, बिजली की आपूर्ति चौबीसों घंटे हो और काम करने के लिए एक सुरक्षित और एकांत जगह हो। साथ ही वहां दफ्तर जैसा माहौल बनाने की सुविधा हो। इसके अलावा सेल्फ डिसिप्लीन भी जरूरी होता है। कुछ लोग जब खुद निर्णय लेना होता है, तो कंसंट्रेट होकर काम नहीं करते। ऐसे काम करने के तरीके से कई प्रोफेशनल्स का निजी जीवन डिस्टर्ब हो जाता है। वे ऑफिस वर्क में बहुत समय देने लगते हैं। इसलिए बहुत सारे लोग शुरू-शुरू में यह फॉर्मूला अपनाते हैं, लेकिन जल्द ही ऊब कर ऑफिस आने लगते हैं। क्योंकि घर में काम करते हुए उनके वर्किंग ऑवर बहुत बढ़ जाते हैं। वर्क फ्रॉम एनीवेयर करते समय भले तनाव कम होता हो, आजादी खूब महसूस होती हो, लेकिन सामाजिक संपर्क से कट जाते हैं और अकेलेपन की आशंका से घिर जाते हैं। इसलिए कई बार कहीं से भी काम करने की सुविधा का नुकसान मानसिक रूप से बीमार होने के रूप में सामने आता है। इसलिए लोग अब हाइब्रिड मॉडल को बेहतर मान रहे हैं यानी चार दिन घर में और दो दिन दफ्तर में काम करना, सही संतुलन है। हां, महिलाओं को जरूर काम करने की इस शैली का फायदा मिलता है, क्योंकि इसके चलते उन्हें होम मेकिंग और करियर में संतुलन बनाने में मदद मिलती है। *

वर्क फ्रॉम एनीवेयर के लिए जरूरी सुविधाएं

- घर में तेज रफ्तार इंटरनेट कनेक्शन होना जरूरी है।
- घर में लैपटॉप के साथ बैकअप पावर की सुविधा होना जरूरी है।
- घर में काम करने के लिए ऑफिस जैसे स्थान का होना जरूरी है।
- रोज सुबह अनुशासित ढंग से तैयार होकर दफ्तर की तरह काम करना जरूरी है।
- घर से काम करते समय कंप्यूटर और साइबर सिक्योरिटी का ज्ञान भी जरूरी है। अगर कंप्यूटर की बेसिक समझ नहीं है तो कभी-भी अगर लैपटॉप या वर्क स्टेशन में कोई समस्या आ गई, तो तब तक काम नहीं कर पाएंगे, जब तक घर कोई मैकेनिक आकर समस्या हल न करे।
- घर से काम करने के लिए लगातार तकनीक में भी माहिर होते रहना जरूरी है।
- घर से काम करते समय लगातार उत्साह बनाए रखना भी जरूरी है ताकि अपना नियमित रूटीन सही से पूरा कर सकें।

आज के दौर में जीवन को सुविधाजनक बनाने वाला मोबाइल बेशुमार लोगों को अपना लती भी बना रहा है। इसके दुष्प्रभावों से बचने के लिए अब लोग तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनके बारे में आप भी जानिए।

मोबाइल एडिक्शन से बचने के लिए

आजमाए जा रहे तरह-तरह के उपाय

टेक्नोलाइफ
लोकमित्र गौतम

हर सुबह आंख खुलते ही मोबाइल। रात में सोते समय आखिरी नजर तक मोबाइल। दिन में बीच-बीच में सैकड़ों बार स्क्रीन चेक करना। अब ये किसी व्यक्ति विशेष की आदत नहीं बल्कि ज्यादातर लोगों की लाइफस्टाइल बन गई है। अब मोबाइल में नोटिफिकेशन देखना याद नहीं रखना पड़ता। लोगों की यह स्वतः आदत बन गई है। लेकिन इसी दौर में कुछ और भी दिलचस्प और विरोधाभासी बातें भी हो रही हैं। एक ट्रेंड बहुत तेजी से उभर रहा है और यह है मोबाइल से दूरी बनाने का। नहीं, लोग तकनीक छोड़ नहीं रहे बल्कि उसके साथ नई-नई शर्तों के तहत रिश्ता तय कर रहे हैं। कोई नोटिफिकेशन बंद कर रहा है, कोई फोन ग्रे स्केल पर डाल रहा है, कोई डंब फोन खरीद रहा है, तो कोई रविवार को मोबाइल अलमारी में बंद करके उसमें ताला लगा देता है। मोबाइल को लेकर उसके पक्ष और उसके विरोध में एक से बढ़कर एक आदतें दुनिया का ध्यान खींच रही हैं।

क्यों छोड़ना चाहते हैं फोन: हाल के कुछ सालों में ऐसे कई अनुभव सामने आए हैं, जिससे पता चलता है कि मोबाइल लोगों का ध्यान बहुत जल्दी भटका देता है। यह भी महसूस किया गया है कि लगातार मोबाइल का इस्तेमाल करने से अधूरेपन का एहसास बढ़ जाता है। मोबाइल की लत लग जाए, तो कब देखते ही देखते टाइम फुर्र हो जाता है, पता ही नहीं चलता। इन सबके अलावा हाल के सालों में बिना कुछ किए लोगों को एक ऐसी थकान जकड़ रही है, जो जानकारों के मुताबिक मोबाइल की देन है। ऐसे ही और भी अनेक कारण हैं, जिसके चलते अब लोग मोबाइल से अगर पूरी तरह से नहीं, तो बीच-बीच में कुछ समय तक के लिए पिंड छुड़ाना चाहते हैं। इसलिए इन दिनों लोग मोबाइल से दूर रहने के लिए तरह-तरह के उपाय आजमा रहे हैं। इनमें से कुछ के बारे में बता रहे हैं।

नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म: बहुत से लोग अब सिर्फ कॉल और जरूरी एप्स के नोटिफिकेशन ही चालू रखते हैं। व्हाट्सएप ग्रुप, सोशल मीडिया लाइक और ई-मेल अलर्ट, सब कुछ लोग बंद कर रहे हैं। इस कारण फोन हाथ में लेने की अपने आप जरूरत कम रह जाती है। ऐसे उपाय अपनाने वाले लोग बताते हैं- जहां वह पहले 125 से 150 बार तक स्क्रीन अनलॉक करते थे, वहीं ऊपर बताए गए उपाय यानी नोटिफिकेशन मिनिमलिज्म के बाद अब ये संख्या घटकर 40 से 50 बार रह गई है।

ग्रे स्केल मोड: इसका मतलब है फोन की रंगीन स्क्रीन को ब्लैक एंड व्हाइट में बदल देना। फोन की दुनिया काली-सफेद होते ही लोगों का रील्स में आकर्षण घट जाता है और स्क्रॉल करने का मन ही नहीं रह जाता। यह एक छोटा-सा उपाय है, लेकिन इसके बेहद असरदार मनोवैज्ञानिक नतीजे हासिल होते हैं। इसके साथ ही कुछ लोग अपने फोन में डाउनलोड किए गए हर मीडिया एप के लिए दिन में 20 से 30 मिनट की लिमिट तय कर देते हैं और लिमिट खत्म होते ही यह एप अपने आप ही लॉक हो जाते हैं, जिससे इनसे मुक्ति मिल जाती है। ये उपाय शुरू में तो झुंझुलाहट पैदा करता है, मगर 3-4 दिन के बाद इसकी आदत बन जाती है।

फोन मुक्त दिन की शुरुआत: कुछ लोग इन दिनों सुबह जगने के बाद एक से दो घंटा तक बिल्कुल मोबाइल के पास नहीं जाते, इस दौरान उनका मोबाइल स्विच ऑफ रहता है। जब तक मोबाइल स्विच ऑफ रहता है, वे फ्रेश होते हैं, चाय पीते हैं, अखबार पढ़ते हैं, एक्सरसाइज का अपना रुटीन खत्म करते हैं या ऐसा कुछ नहीं भी करते हैं तो इस दौरान सिर्फ खिड़की या बालकनी से बाहर झांकते हैं। जो लोग ये उपाय आजमा रहे हैं, उनका अनुभव बताता है कि इससे पूरा दिन शांति महसूस होती है।

सोशल मीडिया फास्टिंग: कुछ लोग सोशल मीडिया फास्टिंग का उपाय भी आजमा रहे हैं। फोन से दूर रहने का यह एक और उपाय है। इसके चलते जैसे कुछ लोग धार्मिक रूप से हफ्ते में किसी एक या दो दिन उपवास रखते हैं। लगभग उसी तरह इस प्रयोग के तहत लोग हफ्ते में एक दिन या 15 दिन में एक दिन फोन से पूरी तरह से दूर रहने का उपाय आजमाते हैं।

बेडरूम से बाहर फोन: कुछ लोग अपने फोन को बेडरूम से बाहर रखकर सोते हैं। इस तरह फोन को बेडरूम से बाहर रखने के बहुत फायदे मिलते हैं। इससे नींद बेहतर आने लगती है। रात की स्क्रॉलिंग खत्म हो जाती है। *

मानसिक स्वास्थ्य के लिए है जरूरी

लोग इस बात को भली-भांति समझने लगे हैं कि फोन के बहुत ज्यादा इस्तेमाल के कारण उनकी आंखों पर ही नहीं, ध्यान लगाने की क्षमता पर, भावनात्मक स्थिरता पर और यहां तक कि आत्मसंतोष की अनुभूति पर भी जबर्दस्त असर पड़ने लगा है। मोबाइल से दूर रहना एक तरह से खुद के पास होने जैसा है। क्योंकि जो लोग बहुत ज्यादा फोन इस्तेमाल करते हैं, उन लोगों के अनुभव बताते हैं कि वो जितना ही ज्यादा फोन में रहते हैं, उतना ही ज्यादा अकेलापन महसूस करते हैं। ऐसे में इससे दूरी बनाने की आदत मानसिक स्वास्थ्य बेहतर बनाती है।

गजल
हबीब कैफी

मोहब्बत में जो लिखता है
अंधेरे में भी दिखता है

वहां कुछ फूल खिलते हैं
जहां वो पांव टिकता है

जिसे सब इश्क कहते हैं
सर-ए-बाजार बिकता है

फकत रोटी नहीं सिकती
तवे पर दिल भी सिकता है

महकता फूल लिखना था
उसी को खार लिखता है

व्यंग्य
महेश कुमार केशरी

मेरे घर आ धमकने का पड़ोसी महोदय को बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। गोया मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो।

प्रभु बचाए ऐसे पड़ोसी से

कहते हैं, सांप चंदन के पेड़ से हमेशा लिपटे रहते हैं। हालांकि मैं चंदन जैसा तो बिल्कुल नहीं हूं, फिर भी न जाने क्यों आस-पड़ोस के लोग मुझसे लिपटने को आतुर रहते हैं। कुछ ऐसे ही बगल के घर में रहने वाले मेरे एक पड़ोसी भी हैं। मेरे घर आ धमकने का उनको बस बहाना चाहिए। कभी चीनी, कभी टमाटर, कभी धनिया पत्ती तो कभी मिर्च गोलकी मांगने चले आते हैं। उन पड़ोसी महाशय को जब-जब कोई जरूरत होती है, वे भुजंग की तरह मुझसे आकर चिपट जाते हैं। गोया कि मैं आदमी नहीं बल्कि चंदन का पेड़ होऊं। उनका मेरे घर आना-जाना ऐसे होता है, जैसे मेरा घर नहीं, कोई धर्मशाला हो। ऐसे पड़ोसी मुझे मिले हैं, जिनको दिन भर में मुझसे दसियों बार काम पड़ता है। 'भाई साहब! भाई साहब!' कह-कह कर वे मुझे चूना लगाते रहते हैं। कभी-कभी तो मुझे लगता है, जैसे मैंने इन पड़ोसी महाशय को गोद लिया हुआ है। और वे मेरे बच्चे सरीखे हैं। वाह रे भाई! मान-न-मान मैं तेरा मेहमान। कभी 'हम बाहर जा रहे हैं, जरा घर देखिएगा।' कभी 'जरा बाइक की चाबी दीजिएगा बच्चे को स्कूल छोड़ने जाना है।' तो कभी 'बाजार जा रहे हैं, जरा मेरा फलना-ढिमकाना सामान भी लेते आइएगा।' अगर कभी थोड़ी नाराजगी मैं जताता तो दांत निपोरते हुए बोलते, 'अब एक पड़ोसी ही तो दूसरे पड़ोसी के काम आता है!' किसी दिन आकर पूछते हैं, 'भाई आपके पास कैंची होगी?' तो किसी रोज कहते, 'भाई साहब आपके पास रस्सी तो होगी?' मन आता है कि कह दूं, 'जिस भी चीज की जरूरत पड़े, वो आपको मुझसे ही चाहिए होती है। भला मैं आपूर्ति मंत्रालय में काम तो नहीं करता कि हर चीज का जुगाड़ करके आपके लिए रखा होऊं। भाई मैंने आपका ठेका थोड़ी न लेकर रखा है।' अभी बीते दिनों उन्हीं पड़ोसी का खल चोरी हो गया। वे मुझ पर झल्लाने लगे, 'आप के भरोसे घर छोड़कर गया था, देखिए मेरा खल चोरी हो गया।' मन में आया उसी खल में उन्हें कूट दूं। कह दूं कि आपने मुझे अपना खरीदा हुआ नौकर समझ लिया है क्या, जो मैं आपकी चाकरी करूंगा।

पता नहीं कब मेरा पिंड छूटेगा इन महाशय से! भगवान बचाए ऐसे पड़ोसी से। *

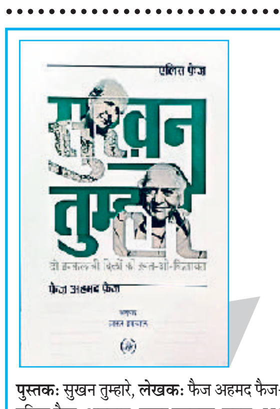

पुस्तक: सुखन तुम्हारे, **लेखक:** फैज अहमद फैज-एलिस फैज, **अनुवाद:** जफर इकबाल, **मूल्य:** 550 रुपए, **प्रकाशक:** राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

दो दिलों की खत-ओ-किताबत

गजलों-नज्मों का शायद ही कोई ऐसा कद्रदान होगा, जो फैज अहमद फैज के नाम से नावाकिफ हो। अपनी शायरी में इंकलाबी तेवर और हुकूमत की बंदिशों को चुनौती देने वाले फैज के भीतर एक नाजुक दिल पति और बेहद जज्बाती पिता भी मौजूद था, इसकी बानगी उनके द्वारा लिखे उन खतों में दिखती है, जिनको उन्होंने कैद के दौरान अपनी पत्नी और बच्चों को लिखे थे। हाल में छपकर आई किताब 'सुखन तुम्हारे' में फैज के द्वारा लिखे गए 135 खत और उनकी पत्नी एलिस के द्वारा लिखे गए 178 खतों को संकलित किया गया है। वर्ष 1951 में पाक सरकार द्वारा गैर कानूनी तौर पर गिरफ्तार किए गए फैज, करीब चार वर्ष तक जेल में रहे। इस दौरान फैज और एलिस के बीच हुई खत-ओ-किताबत का महत्व किसी ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है। यहां गौर करने वाली बात है कि फैज की गिरफ्तारी ने उन्हें बेबस नहीं और मजबूत बना दिया था। 17 जुलाई 1952 को लिखे खत में वह कहते हैं, 'यह जख्म बहुत अचानक, बहुत बेसबब लगा है लेकिन इसे सहने का बल मुझमें है। और इसके सामने भी मेरा सिर नहीं झुकेगा।' 24 अगस्त 1954 को एलिस, फैज को लिखे खत में भीगे जज्बातों से उनकी गैरमौजूदगी को महसूस करती हैं, 'जब मीजू ने केक काटा, उसने अपना मुंह बना लिया। आंखें बंद कीं और उस चीज की दुआ मांगी, जिसके लिए हम सब मांग रहे थे- खुदा तुम्हें हमारे पास घर भेज दें।' कह सकते हैं इस किताब में एक इंकलाबी शायर और उनकी पत्नी के व्यक्तित्व का बिल्कुल नया पहलू हमारे सामने उजागर होता है। *

लघुकथा / डॉ. रंजना जायसवाल

डुबकी

खोया-पाया कैंप में उस बूढ़े बाबा को बैठे छह घंटे हो गए थे। रात गहराती जा रही थी। अभी तक उन्हें कोई ढूंढने भी नहीं आया था। बाबा की आंखें एक आशा के साथ हर आहट के साथ दरवाजे तक जातीं, लेकिन वह निराश होते। कैंप के कर्मचारी की ड्यूटी बदलने का समय हो गया था। नए कर्मचारी ने पानी का गिलास पकड़ाते हुए बाबा से पूछा, 'आप कहां से आए हैं?'

'बेटा काफी दूर से आए हैं।'

'कुछ नाम तो होगा।'

'नाम...' बाबा ने याद करने की कोशिश की।

'किसके साथ आए हैं?'

'कलुवा, हमारा इकलौता बेटा'

'कुंभ नहाए आए थे?'

'हमार बेटवा ब्याह के दस बरस के बाद पैदा हुआ था। उसकी अम्मा मन्नत की रही, गंगा मैया को साड़ी चढ़ाएगी पर परमात्मा को कुछ और ही मंजूर था। अब जइबे तब जइबे करते-करते बख्त निकल गया। उसकी अम्मा ने मरते बख्त कसम ली थी। बचुवा के साथ मन्नत उतारे आए रहे। कुंभ नहाए लेब और मन्नत भी उतार देब।'

'बेटा कहां है बाबा?'

'हमसे बोला कुछ खाए का सामान लेने जाए रहे। इहां बैठे रहो हम अबही आत है।'

'फिर?'

'हमको बैठाकर पता नहीं कहां चला गवा? पुलिस वाले हमको इहां पहुंचा गए। बेचारा कितना परेशान हो रहा होगा।' बाबा की आंखों में अपने बेटे कलुवा के लिए चिंता उभर आई। कर्मचारी समझ चुका था, बीते कुछ दिनों में बाबा जैसे न जाने कितने लोग अपनों की तलाश और इंतजार में भटक रहे थे। 'बाबा, दस बार माइक पर कलुवा का नाम पुकारा जा चुका है। फोन नंबर याद है उसका?'

'फोन?'

'वापसी कब थी?'

'छः बजे की टरेन थी।'

'पर बाबा अब तो नौ बज रहे हैं।'

'नौ!' बाबा की आंखों के जुगनू धप्प पड़ गए।

'कलुवा आता ही होगा। हमें लिए बिना कैसे जाएगा?'

बाबा ने धीरे से बुदबुदाया। सामने गंगा मैया मंद-मंथर गति से बह रही थी। वह एक और पाप की साक्षी थी। जिसे कोई डुबकी धुल नहीं सकती थी। *

मध्य प्रदेश का प्राणपुर गांव

तमिलनाडु स्थित औरोविले गांव

वैसे तो पर्यटन के लिहाज से अपने भारत देश में अलग-अलग तरह के बेशुमार स्थल मौजूद हैं। लेकिन अगर आप बिल्कुल अनोखे और सुकून भरे पर्यटन स्थल घूमना चाहते हैं तो आपको कुछ विशिष्ट पर्यटन गांवों का रुख करना चाहिए। यहां बता रहे हैं देश के कुछ ऐसे खूबसूरत गांवों के बारे में, जो आपके लिए परफेक्ट ग्राम्य-पर्यटन स्थल हो सकते हैं।

गांवों में मिलेगी सुकून की छांव

टूरिस्ट प्लेसेस
समीर चौधरी

आमतौर पर माना जाता है कि गांवों में सुविधाओं की कमी होती है। इसीलिए शहर के लोग वहां जाना पसंद नहीं करते हैं। लेकिन आपको जानकर अच्छा लगेगा कि कुछ प्रदेशों के चुने हुए गांवों को विशिष्ट पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जहां आप आधुनिकता और शहरी शोर-शराबे से दूर शांत, स्वच्छ और सुकून भरा अनुभव पा सकते हैं। लद्दाख की पहाड़ियों और छत्तीसगढ़ के जंगलों से लेकर, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश तक में कई ऐसे गांव हैं, जो विरासत और प्रकृति को सुरक्षित रखे हुए हैं। अपनी इसी विशेषता के कारण यह उन पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं, जिनकी ग्रामीण जीवनशैली, संस्कृति व इतिहास में दिलचस्पी होती है। ऐसे ही कुछ गांवों के बारे में जानिए।

सावरवानी-लाड़पुरा खास-प्राणपुर, मध्य प्रदेशः मध्य प्रदेश के ये तीन गांव आपको ग्रामीण भारत की सुंदर छवियों से रूबरू कराते हैं। प्राणपुर, सावरवानी व लाड़पुरा खास गांवों को वर्ष 2024 में सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। सावरवानी, आपको गोंड आदिवासी जीवन का अनुभव कराता है। यहां आरामदायक होमस्टे और सुंदर फार्मलैंड्स हैं। लाड़पुरा आपको विश्वसनीय बुंदेली एहसास से आकर्षित करता है। यहां के परंपरागत घर व हाथ से पेंट की गईं खूबसूरत दीवारें पर्यटकों को मोहित करती हैं। प्राणपुर, भारत का पहला क्राफ्ट हैंडलूम पर्यटन गांव है, जहां लगभग 900 बुनकर हैं, जो चंदेरी कपड़ा बुनने की कला में माहिर हैं। इन गांवों में आप क्राफ्ट वर्कशॉप्स, फॉरेस्ट वॉक, साइकिलिंग ट्रेल्स और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का अनुभव कर सकते हैं। ग्वालियर एयरपोर्ट से प्राणपुर 240 किमी. और लाड़पुरा खास 123 किमी. की दूरी पर है, जबकि जबलपुर से सावरवानी की दूरी 220 किमी. है।

उत्तर प्रदेश का कारिकोट गांव

तार गांव, लद्दाखः लद्दाख क्षेत्र में इस गांव को पहला सीसीए (कम्युनिटी-डिक्लेयर्ड कंजरवेशन एरिया) घोषित किया गया। लद्दाख का यह खूबसूरत गांव भी पर्यटन मंत्रालय की भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांव की 2024 की सूची में शामिल हो चुका है। इसके संरक्षित क्षेत्र का प्रबंधन स्थानीय समितियां करती हैं, जोकि अपने प्राकृतिक संसाधनों, संस्कृति व परंपराओं को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी निभाती हैं। इनके पास समुदाय की निगरानी वाला पर्यटन, शून्य-प्लास्टिक अभियान और लद्दाखी सांस्कृतिक प्रथाओं के संरक्षण का भी दायित्व है। यहां आप ऊंचाई पर ट्रैकिंग, प्राचीन मठों को देख सकते हैं और ईको-होमस्टे में ठहर सकते हैं। यहां आने के लिए निकटतम एयरपोर्ट लेह है, जहां से तार लगभग 85 किमी. के फासले पर है।

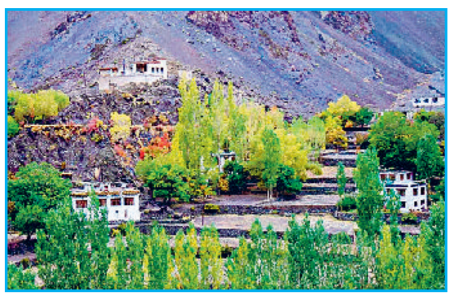
खूबसूरत वादियों के बीच स्थित लद्दाख का तार गांव

कारिकोट गांव, उत्तर प्रदेशः उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले में स्थित कारिकोट गांव को इंडियन सब-कॉन्टिनेंट रेस्पॉन्सिबल टूरिज्म अवार्ड 2025 (पीस, अंडरस्टैंडिंग एंड इन्क्लूसिविटी) से सम्मानित किया जा चुका है। स्थानीय थारू आदिवासी समुदाय के प्रयासों से इस गांव में होमस्टे, क्रॉस-बॉर्डर ईको-टूरिज्म व सांस्कृतिक अनुभव को प्रोत्साहित करने के साथ ही देशज क्राफ्ट, खान-पान व लोककला को पुनर्जीवित किया गया है, जिससे यह गांव थारू विरासत का लाइव म्यूजियम बन गया है। आप यहां खासतौर से विलेज वॉक, स्थानीय खान-पान, हस्तकला ट्रेल, झील के किनारे पक्षियों को देखने के साथ ही स्थानीय कहानी सुनाने के आयोजनों का अनुभव कर सकते हैं। इससे निकटतम एयरपोर्ट लखनऊ है, जहां से यह गांव लगभग 200 किमी. दूर है।

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में स्थित धुडमारास गांव

औरोविले गांव, तमिलनाडु-पुडुचेरीः औरोविले गांव वैसे तो तमिलनाडु में है, लेकिन इसका कुछ हिस्सा पुडुचेरी में भी है। यह भारत में स्थित एक अंतरराष्ट्रीय टाउनशिप है, जिसे यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। इसकी भूमि एक जमाने में कटाव के कारण बेकार हो गई थी, लेकिन अब दशकों के वनीकरण, ईको-आर्किटेक्चर और वेस्ट-फ्री सिस्टम से फिर हरी-भरी हो गई है। यहां पर आप मैत्री मंदिर देख सकते हैं। इसके अलावा सस्टेनेबल-लिविंग वर्कशॉप, पॉटरी, वीविंग और योग सत्र में हिस्सा लेने के साथ ही 3,000 एकड़ में फिर से लगाए गए वन में साइकिलिंग का रोमांचक अनुभव ले सकते हैं। औरोविले गांव चेन्नै एयरपोर्ट से लगभग 140 किमी. और पुडुचेरी से तकरीबन 11 किमी. की दूरी पर स्थित है।

धुडमारास गांव, छत्तीसगढ़ः छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में धुर्वा कबीले द्वारा संचालित यह पर्यटन गांव ईको-फ्रेंडली अनुभव प्रदान करता है, जैसे- बैंबू राफ्टिंग, कयाकिंग और ट्रैकिंग। यहां सोलर-पॉवर इंफ्रास्ट्रक्चर है। वन संरक्षण प्रयासों के कारण परंपरागत जल स्रोतों को दुरुस्त किया गया है और स्थानीय तौर पर निर्मित होम स्टे भी हैं। इस गांव में आदिवासी संस्कृति, परंपरागत शिल्प व साल वन ट्रेल्स का आनंद लेने के साथ ही लोक संगीत और स्थानीय खेतों से मेज तक जायकेदार भोजन का अनुभव ले सकते हैं। सतत पर्यटन विकास के लिए धुडमारास गांव का चयन यूएनडब्लूटीओ बेस्ट टूरिज्म विलेज अपग्रेड प्रोग्राम 2024 में किया गया था। यहां से निकटतम एयरपोर्ट जगदलपुर है, जहां से यह गांव लगभग 35 किमी. के फासले पर है। *

भय को जब करेंगे पराजित तब मिलेगी मनचाही सफलता

कई बार हमारे भीतर कुछ ऐसे डर समा जाते हैं, जो सफलता और खुशहाल जीवन की राह में बड़ी रुकावट बन जाते हैं। कौन से हैं ये डर और इनसे कैसे निपटा जाए, मनचाही सफलता पाने के लिए आपको जरूर जानना चाहिए।

सेल्फ मोटिवेशन / शिखर चंद जैन

डर सफलता की राह में सबसे बड़ी अड़चन होती है। 'जो डर गया समझो मर गया', 'डर के आगे जीत है।' ये कुछ पॉपुलर कोटेशंस या फिल्मी डायलॉग हैं, जिन्हें आपने कहीं न कहीं पढ़ा या सुना होगा। सवाल है कि आखिर ये कौन से डर हैं, जिनसे उबरना जरूरी है और इनसे कैसे उबरें, ताकि आप सफल, समृद्ध जीवन की ओर बढ़ सकें।

पैसे न होने का डरः अमीर हो या मध्य वर्ग के लोग, पैसों की कमी होने से सब डरते हैं। मध्य और निम्न वर्ग को और ज्यादा गरीब होने का डर सताता है। पैसे की कमी का डर व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, जोखिम लेने की क्षमता और हिम्मत को खत्म कर देता है। सबसे पहले निर्णय की शक्ति का उपयोग करके इस डर को दूर करें। अपनी चेतना को हमेशा धन की कमी से हटाकर धन की अधिकता पर केंद्रित करें। धन कमाने के तरीकों के बारे में सोचें, न कि गरीबी के परिणामों के बारे में। अपनी आय बढ़ाने का एक स्पष्ट और लिखित लक्ष्य और योजना बनाएं। जब आपके पास काम करने की एक ठोस योजना होती है, तो डर की जगह आत्मविश्वास ले लेता है। हमेशा यह सोचें कि आपकी आंतरिक खुशी भौतिक संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही पूरी मेहनत से धन कमाने के अपने प्रयास जारी रखें।

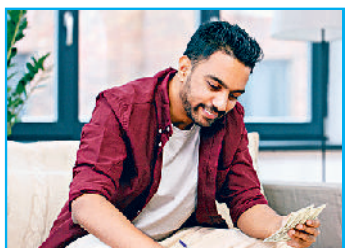

आलोचना का डरः यह डर अकसर लोगों को नए विचार आजमाने, जोखिम लेने या अपने सपनों का पीछा करने से रोकता है, क्योंकि उन्हें लगता है कि दूसरे लोग क्या सोचेंगे या कहेंगे? इस डर को दूर करने का आसान तरीका यही है कि दूसरों की राय की परवाह न करें। लोग अकसर आपकी आलोचना इसलिए करते हैं, क्योंकि या तो वे खुद डरे हुए होते हैं या फिर आपसे ईर्ष्या करते हैं। अपने कार्यों और निर्णयों के लिए खुद को जवाबदेह बनाएं। आत्म-अनुशासन आपको बाहरी आलोचनाओं से प्रभावित हुए बिना अपने लक्ष्य पर टिके रहने में मदद करता है। आलोचना का डर आपकी रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति को खत्म कर देता है। इसलिए खुद को रचनात्मक कार्यों में लगाएं।

बीमारी-मृत्यु का डरः यह डर अकसर किसी क्रॉनिक बीमारी या नियमित शारीरिक दर्द से उत्पन्न होता है। कई बार किसी नजदीकी की बीमारी देखकर भी ऐसा होता है। यह डर अकसर मानसिक तनाव पैदा करता है। इसे दूर करने के लिए बीमारी के बारे में लगातार सोचना या बात करना बंद करें। अपने मन को सकारात्मक और स्वस्थ विचारों से भरें। स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली अपनाएं। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और पर्याप्त आराम पर ध्यान केंद्रित करें। अपनी दिमागी शक्ति का उपयोग करें। यह विश्वास करें कि एक स्वस्थ दिमाग एक स्वस्थ शरीर का निर्माण करता है। अपनी मानसिक ऊर्जा को ठीक होने या स्वस्थ रहने में लगाएं, न कि बीमार पड़ने के डर में।

रिश्ते खोने का डरः यह डर किसी प्रियजन, जीवनसाथी या परिवार के सदस्य से बिछड़ने या उन्हें खोने के भय से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए आत्म-प्रेम और आत्मविश्वास बढ़ाएं। जब आप खुद से प्यार करते हैं और खुद पर भरोसा करते हैं, तो आप दूसरों पर भावनात्मक रूप से कम निर्भर रहते हैं। ईर्ष्या इस डर का सबसे बड़ा संकेत है। तर्कसंगत रूप से अपनी असुरक्षाओं को पहचानें और उन्हें तर्क से दूर करें। यह समझें कि आप किसी को नियंत्रित नहीं कर सकते। रिश्ते विश्वास और आपसी सम्मान पर टिके होते हैं, डर पर नहीं।

बुढ़ापे का डरः यह डर अकसर उम्र बढ़ने के साथ आने वाली शारीरिक कमजोरी, शारीरिक आकर्षण में कमी, आर्थिक अभाव और मृत्यु की संभावना से जुड़ा होता है। इसे दूर करने के लिए बुढ़ापे को अनुभव और ज्ञान के रूप में देखें। उम्र बढ़ने को कमजोरी के रूप में नहीं, बुद्धिमत्ता के संचय के रूप में स्वीकार करें। शारीरिक और मानसिक रूप से सक्रिय रहकर इस डर का मुकाबला करें। नए कौशल सीखें और जीवन में उत्साह बनाए रखें। अपनी आर्थिक सुरक्षा शुरू से ही सुनिश्चित करें। वित्तीय योजना बनाकर बुढ़ापे में संभावित गरीबी के डर को कम करें।

इनमें से कोई डर हो या कोई अन्य प्रकार का डर, सभी डरों को दूर करने का मूल मंत्र 'इच्छाशक्ति' और 'सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण' है। इन दो मूल मंत्रों को अपनाकर आप भयमुक्त खुशहाल जीवन जी सकते हैं। *

भारत की प्राचीनतम और महानतम नदियों- गंगा, नर्मदा की तरह ही ताप्ती नदी का भी भारतीय संस्कृति, भूगोल एवं अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है। ताप्ती नदी से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों के बारे में बता रहे हैं, जिनसे आप इस नदी की महत्ता को और भी अच्छे से जान-समझ पाएंगे।

गंगा-नर्मदा जैसी महत्वपूर्ण पश्चिमवाहिनी ताप्ती नदी

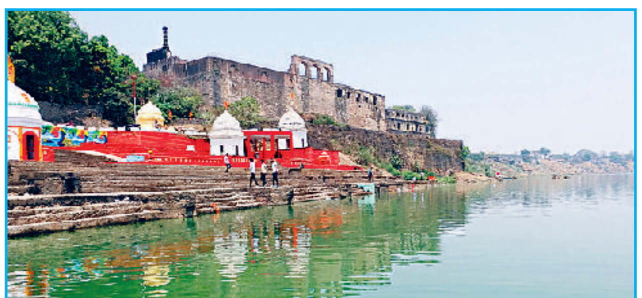

नदी गाथा / वीना गौतम

ताप्ती जिसे तापी नदी भी कहते हैं, भारत की उन चुनिंदा बड़ी पश्चिम वाहिनी नदियों में से है, जो मध्य भारत से निकलकर अरब सागर में गिरती है। यह विशेषता इसे गंगा जैसी विशाल पूर्व वाहिनी नदी और नर्मदा जैसी महान पश्चिम वाहिनी नदी के समकक्ष बनाती है। भौगोलिक, आर्थिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक स्तरों पर इस नदी की भूमिका अत्यंत व्यापक है।

उद्गम-प्रवाहः ताप्ती नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के बेतूल जिले के पास सतपुड़ा पर्वतमाला में है। यहां से लगभग 724 किलोमीटर की यात्रा तय करते हुए महाराष्ट्र और गुजरात से गुजरती यह नदी अंततः अरब सागर में जा मिलती है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है। इस नदी की सहायक नदियां इसकी जलराशि को संपन्नता प्रदान करती हैं। ताप्ती की सहायक नदियों में पूर्णा, गिर्णा, वाघुर और अंजली जैसी नदियां शामिल हैं। ताप्ती को गंगा और नर्मदा के समकक्ष महत्वपूर्ण नदी इसलिए माना जाता है, क्योंकि यह भी इन्हीं की तरह विशाल नदी घाटी प्रणाली बनाती है। ताप्ती नदी का जलभरण क्षेत्र लगभग 65 हजार वर्ग किलोमीटर है।

ताप्ती नदी के तट पर स्थित मंदिर

जहां तक इसके बहाव की गति की बात है, तो शुष्क मौसम में इसका बहाव 0.3 से 0.6 मीटर प्रतिसेकेंड होता है, जबकि मानसून के दौरान ताप्ती नदी का बहाव 1.5 से 3 मीटर प्रति सेकेंड तक पहुंच जाता है। ताप्ती का औसत वार्षिक प्रवाह 17 से 18 बिलियन घन मीटर आंका गया है। इसका अधिकांश भाग जून से सितंबर यानी मानसून के दौरान प्राप्त होता है। ताप्ती नदी की वर्षा पर निर्भरता करीब 75 फीसदी है और शेष 25 फीसदी जलराशि इसके भूजल, पुनर्भरण और सहायक नदियों के जरिए प्राप्त होता है।

संस्कृति की वाहकः जिस तरह गंगा नदी-घाटी में प्राचीन सभ्यताएं विकसित हुईं, वैसे ही ताप्ती घाटी में भी आदिवासी समाज, कृषि संस्कृतियां और व्यापारिक नगर विकसित हुए। गंगा और नर्मदा की तरह ताप्ती को भी अनेक स्थानों में पवित्र नदी का दर्जा प्राप्त है और इसके किनारे मेले और पवित्र स्नानों से संबंधित पर्व आयोजित किए जाते हैं। देश की दूसरी पवित्र नदियों की तरह ताप्ती के तट पर भी अनेक महत्वपूर्ण मंदिर स्थित हैं।

अर्थव्यवस्था में योगदानः चूंकि ताप्ती पश्चिम वाहिनी नदी है, इसलिए इसमें ढाल अपेक्षाकृत ज्यादा है। यही कारण है कि इसका प्रवाह पूर्वगामी नदियों के मुकाबले ज्यादा है, जिससे जल विद्युत उत्पादन के लिए ताप्ती महत्वपूर्ण नदी मानी जाती है। इसके पानी का उपयोग सिंचाई के लिए, पेयजल के रूप में, औद्योगिक उपयोग हेतु तथा विद्युत उत्पादन आदि में किया जाता है। ताप्ती नदी की मिट्टी जलोढ़ है, जो अत्यंत उपजाऊ होती है। इस कारण इसके परिक्षेत्र में दोहरी फसल प्रणाली सहजता से संभव है और किसान अपेक्षाकृत कम सिंचाई लागत में खेती कर पाते हैं। ताप्ती बेसिन एक स्वतंत्र और बड़ा जलग्रहण क्षेत्र है, जो लाखों लोगों की कृषि, पेयजल और औद्योगिक आवश्यकताओं को पूरा करती है। यह गुण ही इसे पश्चिम की नर्मदा और पूर्व की गंगा जैसी नदियों के समकक्ष बनाती है। ताप्ती घाटी कपास, सोयाबीन, गन्ना, केला और विभिन्न तरह की दालों की खेती के लिए जानी जाती है। गंगा की तरह ताप्ती नदी भी कृषि आधारित जीवनरेखा की भूमिका निभाती है। ताप्ती नदी कृषि एवं ग्रामीण रोजगार का भी बड़ा आधार बनाती है।

ताप्ती नदी के किनारे स्थित शहर विशेष रूप से कपड़ा, रसायन, हीरा कटाई और खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे लाखों रोजगार और शहरी विकास को बल मिलता है। इसी नदी के किनारे सूरत जैसा औद्योगिक और व्यापारिक शहर स्थित है।

समृद्ध पारिस्थितिक तंत्रः ताप्ती नदी में मीठे पानी की अनेक महत्वपूर्ण प्रजातियों की मछलियां पाई जाती हैं, जिनमें रोहू, कतला और मृगल शामिल हैं। सतपुड़ा क्षेत्र से गुजरते समय यह नदी कई वन क्षेत्रों को सिंचित करती है, जिससे वन क्षेत्रों का पारिस्थितिकी तंत्र गतिशील रहता है। ताप्ती नदी के डेल्टा क्षेत्र में पक्षियों की कई प्रजातियां पाई जाती हैं और प्रवासी पक्षियों का भी यह आश्रय स्थल बनती है। ताप्ती बेसिन में नदी का पानी आस-पास के जलस्रोतों को भरता है, जिससे कुओं, नलकूपों आदि में पूरे साल जल उपलब्ध रहता है।

मौजूद हैं कई संकटः देश की अन्य बड़ी नदियों की तरह ताप्ती भी कई तरह की औद्योगिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है। यह भी औद्योगिक प्रदूषण से ग्रस्त है। इस नदी में भी बड़े पैमाने पर शहरी अपशिष्ट आकर मिलता है तथा इसके आस-पास में भी अवैध रेत खनन आदि की घटनाएं होती रहती हैं। सबसे चिंताजनक बात यह है कि हाल के कुछ सालों में जलवायु परिवर्तन और वर्षा की अनिश्चितता की भी यह नदी शिकार हुई है। यही नहीं इस सबके चलते ताप्ती नदी की गुणवत्ता और जैव विविधता दोनों प्रभावित हुई है। ताप्ती नदी पर मंडरा रहे इन संकटों के मद्देनजर इसके संरक्षण के लिए कई कदम उठाए गए हैं। जैसे अपशिष्ट जलशोधन संयंत्र, नदी किनारे हरित पट्टी का विकास, सामुदायिक जागरुकता और सतत जल प्रबंधन। *

पिछले महीने से सोनी एंटरटेनमेंट चैनल और सोनी लिव पर एक नया शो शुरू हुआ है- 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून', जिसे होस्ट कर रहे हैं अक्षय कुमार। इस शो को उन्होंने क्यों एक्सेप्ट किया? इस शो, अपकमिंग फिल्मों के साथ-साथ अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े सवालों पर अक्षय कुमार ने खुलकर जवाब दिए हैं इस खास मुलाकात में।

जो आपकी तकदीर में है वह जरूर आपके पास आएगाः अक्षय कुमार

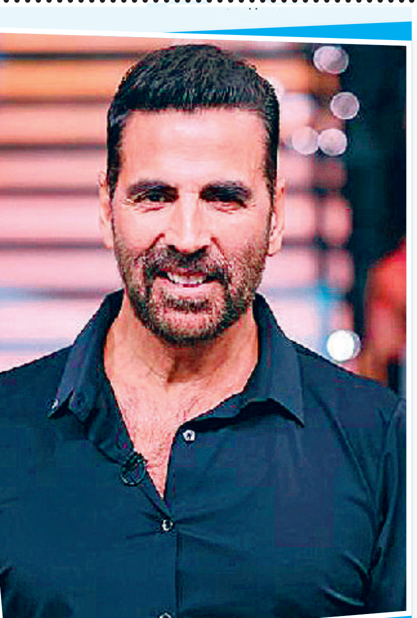

खास मुलाकात
आरती सक्सेना

हाल में ही अक्षय कुमार टीवी और ओटीटी प्लेटफॉर्म पर एक ऐसा रियालिटी शो लेकर आए हैं, जो पहले से ही 60 देशों में पॉपुलर हो चुका है। यह अमेरिका का नंबर वन रियालिटी शो है। इस शो का नाम 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून' है। गेम का पूरा फॉर्मेट अक्षय कुमार खुद बतौर होस्ट इस शो की शुरुआत में समझाते हैं, साथ ही मजाकिया अंदाज में सबको हंसाते नजर आते हैं। इस शो के अलावा अक्षय की फिल्म 'हैवान' रिलीज होने वाली है, जबकि एक और फिल्म 'भूत बंगला' अप्रैल में रिलीज होगी। दोनों ही फिल्मों को प्रियदर्शन ने डायरेक्ट किया है। अक्षय का अपने इस शो और आने वाली फिल्मों को लेकर क्या कहना है? और भी पर्सनल सवालों के जवाब अक्षय कुमार ने एक मुलाकात में बेबाक अंदाज में दिए। पेश है अक्षय कुमार से हुई लंबी बातचीत के प्रमुख अंश-

आप इन दिनों सोनी एंटरटेनमेंट चैनल पर टेलिकास्ट हो रहे गेम शो 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून' को होस्ट कर रहे हैं। इस गेम शो को होस्ट करने के पीछे खास वजह क्या है?

मुझे यह शो बहुत ही दिलचस्प लगा, क्योंकि इसमें पार्टिसिपेंट्स को ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने का मौका मिलता है। बहुत ज्यादा दिमाग नहीं लगाना है। अगर तकदीर ने साथ दिया तो कंटेस्टेंट्स, कुछ मिनटों में लाखों रुपए और कई अच्छे और महंगे गिफ्ट जीत सकते हैं। इस शो का फॉर्मेट सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी पॉपुलर है। पर्सनली मुझे भी इस शो में कई सारी खूबियां नजर आईं, इसलिए मैंने बतौर होस्ट यह शो करना स्वीकार किया।

अमिताभ बच्चन ने टीवी पर 'कौन बनेगा करोड़पति' और सलमान खान ने 'बिग बॉस' जैसे सुपरहिट शो के कई सीजंस सफलतापूर्वक होस्ट किए हैं। ऐसे में क्या आपको इन दोनों कलाकारों से कंपैरिजन का भी प्रेशर है?

नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। मैं इस मामले में बहुत पॉजिटिव हूं। मुझे कुछ करना है तो मैं करता हूं, नेगेटिव बातें सोच कर अपने आप को कमजोर नहीं बनाता। मुझे 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून' का कॉन्सेप्ट दिलचस्प लगा तो मैंने शो होस्ट करना मंजूर कर लिया। जहां तक अमित जी और सलमान का सवाल है तो अमित जी मेरे लिए फादर फिगर हैं, सलमान मेरा अच्छा दोस्त है। दोनों ही लोग अपना काम बहुत अच्छे से कर रहे हैं। मेरा उनके साथ कोई कॉम्पिटिशन नहीं है। मैं इस शो को एंज्वॉय कर रहा हूं।

अगर 'व्हील ऑफ फॉर्च्यून' में आप होस्ट की जगह पार्टिसिपेंट होते तो आप दिमाग से खेलते या नसीब के भरोसे गेम को आगे बढ़ाते?

यह शो दिमाग से ज्यादा तकदीर के साथ खेला जा सकता है। शो में दिमाग सिर्फ इतना ही लड़ा सकते हैं कि गेम के दौरान पूछे गए सवालों का जवाब सोच-समझ कर दें, बाकी जब व्हील घूमता है तो जीरो पर भी रुक सकता है और एक करोड़ पर भी। मैंने इस शो में कई लोगों को लाखों रुपए जीतते हुए देखा है। सो अगर मैं कंटेस्टेंट होता तो मुझे भी सही जवाब देना पड़ता, बाकी किस्मत कितना साथ देती है, वह तो अपने हाथ में नहीं होता है।

'व्हील ऑफ फॉर्च्यून' में अक्षय कुमार का निराला अंदाज

अपने इस शो में क्या आप किसी खास बॉलीवुड एक्टर को बुलाना चाहेंगे?

अगर बॉलीवुड एक्टर को अपने शो में बुलाने की बात करें तो मैं सलमान, शाहरुख, विद्या बालन, सुनील शेट्टी, संजय दत्त इन सभी को अपने शो में बुलाना चाहूंगा।

आप तकदीर पर ज्यादा विश्वास करते हैं या मेहनत पर?

मेरा मानना है अगर आपकी तकदीर में कुछ नहीं है तो आप लाख कोशिश कर लो वह नहीं मिलेगा और अगर तकदीर में कुछ है तो आप वो पा ही लेंगे। मैं जब छोटा था तो अपने पापा के कंधों पर चढ़कर राजेश खन्ना साहब की शूटिंग और उनका बंगला देखने जाया करता था, मुझे क्या पता था कि एक दिन मेरी उनकी बेटी से ही शादी हो जाएगी। इसलिए मेरा मानना है कि जिंदगी में कुछ भी असंभव नहीं है। जो आपकी तकदीर में लिखा है, वह जरूर आपके पास आएगा।

बीते कुछ समय में आपकी कई फिल्में असफल रहीं। क्या फ्लॉप फिल्मों ने आपको निराश किया?

फ्लॉप फिल्में कुछ समय के लिए दुःखी जरूर कर देती हैं, लेकिन जिंदगी में कभी मैं निराश नहीं होता हूं। करियर की शुरुआत में मैंने 12 से 15 फिल्में एक साथ फ्लॉप दी थीं। लेकिन बाद में तकदीर ने पलटा खाया और मेरी कई फिल्में हिट हो गईं, जैसे 'खिलाड़ी', 'मोहरा', 'मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी' एक्सेक्ट्रा। मेरा मकसद अपने किरदार के साथ पूरा न्याय करना है। फिर फिल्म फ्लॉप होती है या हिट, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

आने वाली फिल्म 'हैवान' में आप नेगेटिव रोल कर रहे हैं, क्या यह आपकी हीरो वाली इमेज को नुकसान पहुंचा सकता है?

मेरे ख्याल में ऐसा होगा नहीं, क्योंकि दर्शक भी अपने हीरो को हर तरह के किरदार में देखना चाहते हैं। 'हैवान' में मैं एक बार फिर नेगेटिव रोल कर रहा हूं। मुझे ऐसा लगता है कि दर्शक मुझे इस फिल्म के किरदार में भी बतौर एक्टर खूब पसंद करेंगे। *

पैसों से ज्यादा महत्वपूर्ण प्यार और रिश्ते

अक्षय कुमार के लिए लाइफ में पैसा ज्यादा महत्वपूर्ण है या प्यार, पूछने पर उनका जवाब होता है, 'मेरी नजर में लाइफ में पैसों से ज्यादा प्यार और रिश्तों की अहमियत है। मुझे अपनी बेटी के साथ वक्त बिताना बहुत अच्छा लगता है। खाली वक्त में मैं घर पर अपने परिवार के लिए खाना भी बनाता हूं। अगर आपके अपने आप के साथ हैं तो आप मेहनत करके पैसा कमा सकते हैं, लेकिन पैसों से आप रिश्ते या प्यार नहीं खरीद सकते हैं।'